सत्यमेव जयते

सविता

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिंदी गृह पत्रिका

अक्तूबर 2019 – मार्च 2020

महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा) एवं

महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) के कार्यालय

केरला, तिरुवनंतपुरम

नराकास की द्वितीय उत्कृष्ट हिंदी पत्रिका का पुरस्कार प्राप्त करते हुए
व.उ.म.ले. (प्रशा.) डॉ अनीष डी एवं हिंदी अधिकारी श्रीमती जे.आर.आशा

कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका सविता का अप्रैल - सितम्बर 2019 अंक का विमोचन
करते हुए महालेखाकार श्री एस. सुनील राज एवं महालेखाकार श्री को.प.आनंद

महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा) एवं

महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) के कार्यालय

केरला, तिरुवनंतपुरम

अनन्या कृष्णा, सुपुत्री बिन्दु के.एन.
वरि.लेखापरीक्षक, द्वारा बनाई गई कलाकृति

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सविता

हिंदी गृह पत्रिका

अक्तूबर 2019 - मार्च 2020

मुख्य संरक्षक

श्री एस. सुनील राज
महालेखाकार

संरक्षक

श्री को.प. आनंद
महालेखाकार

मुख्य संपादक

डॉ अनीष डी
वरिष्ठ उप महालेखाकार

परामर्शदाता

श्रीमती शेरिन एम एस
उप महालेखाकार (प्रशासन एवं राजस्व क्षेत्र)

सदस्य

श्रीमती एस. लक्ष्मी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती ए एम भद्राम्बिका
हिंदी अधिकारी

श्रीमती राधिका टी वी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

सुश्री किरणदीप कौर
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री शिबी बेन्नी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती जे आर आशा
हिंदी अधिकारी

श्री संदीप कुशवाह
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री सादत हुसैन रिज़वी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

आवरण पृष्ठ सहित पन्छियों के चित्र- श्रीमती रूपा राज

लेआउट – श्री सादत हुसैन रिज़वी

पत्रिका में प्रस्तुत विचार रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं।
संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं।

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

'सविता' के नए अंक के प्रकाशन पर मुझे असीम प्रसन्नता हो रही है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और विभागीय पत्रिकाओं के बीच एक अटूट संबंध है - राजभाषा के प्रति कर्मियों का लगाव। पत्रिकाओं के माध्यम से वे अपनी सृजनात्मक प्रतिभा को निखारने के साथ-साथ हिंदी के प्रति अपने दायित्वों का निर्वाह करने में सक्षम होते हैं। सरकारी कामकाज की भाषा होने के नाते राजभाषा हिंदी का सम्मान करना और अपने दैनिक कार्यों में इसका अधिकाधिक प्रयोग करना हमारा संवैधानिक एवं नैतिक कर्तव्य है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं पत्रिका परिवार को बधाई देता हूँ। इस पत्रिका के प्रकाशन में कार्यालय कर्मियों द्वारा दिया गया योगदान अत्यंत सराहनीय है। उम्मीद है वे अपनी रचनात्मकता को इसी प्रकार सार्थक करते रहेंगे। पत्रिका के उत्तरोत्तर एवं गुणात्मक विकास हेतु मेरी शुभकामनाएं।

को.प. आनंद
महालेखाकार (आ.रा.क्षे.ले.प)

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भारत जैसे बहुभाषी देश के समरस समायोजन के लिए उत्तर से दक्षिण और पश्चिम से पूर्व तक बोली व समझी जाने वाली एक स्वभाषा की मांग स्वतंत्रता संग्राम के समय से ही रही थी। इस आशय के मद्देनज़र देश की अखंडता को बनाए रखने हेतु संविधान निर्माताओं ने हिंदी भाषा को राजभाषा के रूप में स्वीकारा । राजभाषा से आशय है राज करने या शासन करने की भाषा। हमारे कार्यालय के प्रशासनिक कामकाज में हिंदी के प्रयोग में हो रही बढ़ोतरी इस बात की द्योतक है कि हमारे कार्यालय में राजभाषा हिंदी सर्वोच्च पद पर विराजमान है और गतिशील भी।

राजभाषा के संवर्धन से जुड़े कार्यकलापों में कार्यालयीन पत्रिकाओं के प्रकाशन की भूमिका महत्वपूर्ण है । राजभाषा के प्रति प्रत्येक कर्मचारी की निष्ठापूर्ण आचरण और प्रतिबद्धता का निदर्श है हमारी गृह पत्रिका 'सविता'। पत्रिका में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों का हार्दिक अभिनंदन साथ ही पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं।

शुभकामनाएँ ।

एस. सुनील राज
महालेखाकार (सा.सा.क्षे.ले.प)

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय की अर्ध वार्षिक गृह पत्रिका 'सविता' के नवीनतम अंक के प्रकाशन हेतु बहुत बधाई । हिंदी विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है तथा उन्नत भाषाओं में इसकी गणना की जाती है । यह हमारी सभ्यता और संस्कृति की परिचायक है । केवल जन साधारण की संपर्क भाषा तक सीमित ना रह कर सूचना प्रौद्योगिकी, मीडिया, विज्ञान, अनुसंधान आदि विविध क्षेत्रों में अपने पंख पसार चुकी है और निरंतर विकास की ओर अग्रसर है ।संवैधानिक दायित्वों का निर्वाह करते हुए प्रेरणा और प्रोत्साहन से राजभाषा हिंदी को ऐसे ही आगे बढ़ाते रहने के लिए हमें निरंतर प्रयत्नशील रहना है ।

कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने जो विभिन्न कदम उठाए हैं, विभागीय पत्रिकाओं का प्रकाशन उनमें से एक है। इस उद्देश्य की पूर्ति में 'सविता' सदैव अग्रणी रही है । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य और उत्तरोत्तर विकास के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

शेरिन एम एस

उप महालेखाकार (प्रशा. एवं रा.क्षे.)

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संपादक की कलम से...

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका 'सविता' का वर्ष 2020 का प्रथम अंक आप सभी सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। अपने नए रंग-रूप और साज-सज्जा में सजी हिंदी पत्रिका 'सविता' का यह अंक राजभाषा हिंदी को उन्नत पथ की ओर ले जाने का हमारा विनम्र प्रयास है।

विश्व के सभी देशों की अपनी एक भाषा होती है जो संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने की क्षमता रखती है। अब राजभाषा हिंदी हमारे देश की सबसे बड़ी संपर्क भाषा है, जो देश के सभी प्रान्तों में बोली व समझी जाती है। भारतीय भाषाओं का इतिहास देखें तो पता चलता है कि देश की प्रगति के पथ पर हिंदी भाषा पाथेय रहा है।

आज विज्ञान और जीवन एक सिक्के के दो पहलू बन गए हैं वर्तमान समय में कोई भी भाषा कंप्यूटर तथा सदृश अन्य उपकरणों से दूर रह कर जनता से जुड़ी नहीं रह सकती। कंप्यूटर के विकास के प्रारंभ से लेकर लोगों का यह विश्वास था कि कंप्यूटर अंग्रेज़ी के अलावा किसी अन्य भाषा में काम नहीं कर सकता। लेकिन यूनिकोड के पदार्पण के बाद चित्र बदल गए और हिंदी भाषा की कंप्यूटर और इंटरनेट पर अच्छी उपस्थिति दर्ज हुई। गूगल जैसे सर्च इंजन हिंदी को प्राथमिक भारतीय भाषा के रूप में पहचानते हैं। वर्तमान परिदृश्य में हिंदी भाषा बहुत आगे बढ़ चुकी है और अब हिंदी राष्ट्र द्वारा ही नहीं बल्कि पूरे विश्व द्वारा मान्यता प्राप्त भाषा है जिसे समग्र राष्ट्र की जनता- अन्य भाषा भाषी होते हुए भी जानते और समझते हैं।

कार्यालयीन हिंदी पत्रिकाएं जहां एक ओर कर्मचारियों की रचनात्मक अभिव्यक्तियों का साधन हैं वहीं यह कर्मचारियों को अपने विचार, उदगार एवं गतिविधियों को हिंदी में प्रस्तुत करने हेतु मंच प्रदान करती हैं।मुझे विश्वास है कि 'सविता' का यह अंक आप सभी को पसंद आयेगा। पत्रिका में सुधार लाने हेतु आपकी राय एवं सुझावों का स्वागत रहेगा।

अनीष

डॉ. अनीष डी.
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

इस अंक में

1. प्रकृति

सुश्री अश्वती एस., ब.क.क.

2. पंख वाले दोस्त

सुश्री जेनिफर जोन सुपुत्री श्रीमती उषा बर्टी, वरि.ले.प.अ.

3. मेरा संघर्ष - मेरा अभिमान

श्री हरिओम, डी.ई.ओ

4. प्यार

श्री अनिल कुमार के, वरि. लेखापरीक्षक

5. अंडमान में बिताए खूबसूरत लम्हें

श्री एन सजीव कुमार, स.ले.प.अ

6. विश्व विरासत सभ्यता- हम्पी

श्रीमती सुशीला पी वी, वरि.ले.प.अ.

7. स्लीप पैरालिसिस

सुश्री किरणदीप कौर, कनि.अनुवादक

8. हिंदी पखवाड़ा समारोह - एक रिपोर्ट

9. रेल यात्राएं- नॉस्टेलजिया

श्री शाहनवाज़ नज़ीर मोहम्मद, व.ले.प.

10. राजस्थान की धरोहर - बावड़ियां

श्री अनिल शर्मा, वरि. ले.प.

11. 31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष के लिए भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक का प्रतिवेदन (राज्य वित्त) केरला सरकार का कार्यकारी संक्षेप

12. आपसी बातें

श्री केवल कुमार मकवाना, वरि.ले.प

13. खेल

श्री पारितोष चौधरी, वरि.ले.प.

14. मनुष्य का दुश्मन- आलस्य

सुश्री नीरू त्रिपाठी, आशुलिपिक

15. खुद से बातें

श्री शंकर मेहरवाल, डी.ई.ओ

16. सनम

श्री कुमार सौरभ, वरि.ले.प.

17. खाने में एम एस जी—अच्छा या बुरा

श्रीमती सुजाता साई कुमार, पत्नी श्री साई कुमार जे ए, वरि. ले.प

18. मेरा शौक पुस्तकें पढ़ना

श्री जोशुआ जोन, सुपुत्र श्रीमती उषा बर्टी, वरि.ले.प.अ.

19. अपना आशियाना

श्री अभिनंद अनीष, सुपुत्र श्रीमती जास्मिन ए, लेखापरीक्षक

20. विहंगों का जीवन सदेश

श्रीमती उषा बर्टी, वरि.ले.प.अ.

21. मानव का गुण - विनम्रता

श्री आशीष कुमार, लेखापरीक्षक

22. जाति प्रथा - एक अभिशाप

श्री आलोक देव सुपुत्र श्रीमती श्रीजा एस., व. लेखापरीक्षक

प्रकृति

अश्वती एस

बहु कार्य कर्मी

कितनी श्रेष्ठ है हमारी प्रकृति

कितनी खूबसूरत कितनी रंग-बिरंगी

ज़िंदगी का प्रथम पाठ हम यहां से सीखते हैं

ऊपर उठने वाले सूरज को देखो

वो कितने नि:स्वार्थ भाव से सबके जीवन में प्रकाश भरते हैं।

नीचे बहने वाली नदी को देखो

वो कल-कल बहती जाती है

बिना रुके, बिना थके

हर बाधा हर संकट को पार कर

सागर में मिल जाती है।

जहां निवास हम करते हैं

उस धरती माँ को देखो

कितने धैर्य से सबको सहती है।

छाया देते पेड़ को देखो

कितने उत्साह से सबकी मदद करता है

फल-फूल, लकड़ी औषधियां क्या नहीं देता है।

हमको खुशी देने वाले पक्षियों को देखो।

ऐसी प्रकृति का हम शोषण करते हैं, उसे आहत करते हैं

कितने शर्म की बात है।

प्रकृति से प्यार करो

अपनी माँ जैसे उसकी रक्षा करो।

पंख वाले दोस्त

जेनिफर जोन

सुपुत्री श्रीमती उषा बर्टी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा

हमारे घर के पीछे में एक सुंदर बगीचा है जहां कई तरह के पक्षी आते रहते हैं। दो साल पहले तक हम विदेश में रहते थे उस समय दादाजी इस बाग की देखभाल करते थे। लेकिन अब वह बहुत बूढ़े और कमज़ोर हो गए थे। इसलिए हमने विदेश छोड़कर घर वापस आने का फैसला किया। मुझे और मेरी छोटी बहन को पक्षियों से बहुत प्यार है। पक्षियों के चहकने की आवाज़ सुन कर उठने से बहुत ताज़गी महसूस होती है।

अब तो दादाजी हमारे साथ नहीं रहे। उनके निधन के पहले ही उन्होंने मुझे पक्षियों के बारे में बहुत कुछ सिखाया। विभिन्न पक्षियों की आवाज़ों को पहचानना, उन्हें दाने और अनाज खिलाना...... ये सब दादाजी ने ही हमें सिखाया। मेरे पिताजी घर का विस्तार करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने एक ठेकेदार को घर बुला लिया।

उसने कहा कि पीछे के बगीचे की जगह निर्माण कार्य के लिए लेनी पड़ेगी तो पिताजी ने बगीचे के पेड़ कटवाने का निश्चय किया। निर्माण प्रक्रिया अगले हफ्ते शुरु होने वाली थी और मुझे नहीं पता था उन्हें कैसे रोकना है। मैंने पिताजी से विनती की कि बगीचे को नष्ट नहीं करना चाहिए। अगर बगीचा नहीं रहा तो पंछी भी नहीं आएगें। लेकिन पिताजी अपने फैसले पर अटल रहे।

उसी दिन शाम में मैं बगीचे में टहल रही थी। अचानक मुझे ज़ोर से पक्षियों के चीखने की आवाज़ सुनाई दी। वो बहुत परेशान दिख रहे थे और हमारे घर की खिड़की के बाहर शोर मचा रहे थे।

मुझे दादाजी की बात याद आई जब कोई विपत्ति आने वाली होती है तो पक्षी ऐसे ही शोर मचाते हैं, तोता और मैना मेरे ऊपर चक्कर लगा रहे थे। पक्षियों के इस असामान्य व्यवहार से मुझे कुछ खतरा महसूस हुआ। मैंने इधर-उधर देखा तो एक साँप कमरे की खिड़की से रेंग रहा था जहाँ मेरी बहन सो रही थी। मैं अपने पिताजी के पास भागी और उन्होंने नौकरों की मदद से उस साँप को मार डाला। मैंने पिताजी को बताया कि पक्षियों ने ही हमारी मदद की है और दोबारा विनती की कि पेड़ मत काटो। अब तो पिताजी का भी मन बदल गया। उन्होंने वादा किया कि बगीचे को नष्ट नहीं करेंगें।

बगीचे को बनाए रखते हुए ही पिताजी ने घर का विस्तार किया और हमारे खेलने के लिए पिताजी ने बगीचे में एक छोटा ट्री हाउस और पक्षियों के लिए एक फव्वारा भी लगवा दिया। आजकल मैं और मेरी बहन एक साथ पेड़-पौधों को पानी देते हैं, पक्षियों को खाना खिलाते हैं और बगीचे को साफ करते हैं। हर रोज़ पक्षी हमारे बगीचे में आते हैं और उनको देखकर मन खुशी से झूम उठता है।

मेरा संघर्ष....

....मेरा अभिमान

हरिओम

डाटा एन्ट्री ऑपरेटर

कुछ ख्वाब हैं जो हमें जगाने आये हैं।

आज सब लोग हमें घर से बुलाने आये हैं।

पीछे छोड़े थे जो क़दमों के निशां हमने,

ये जुगनू हैं जो रास्ता दिखाने आये हैं।

पर्वतों पे चढ़ने का हुनर सीखा हमने

और आप इस दरिया की गहराई बताने आए हैं।

सूख चुका है अब तो ये समंदर भी

आँसुओं की हिमाकत तो देखो हमें रूलाने आये हैं।

झूठ ही झूठ भरा है इस सारे जहां में देखो

क्या बचा है आख़िर अब जो बताने आये हैं।

जो भुला चुके थे हमें ख्वाबों में भी

अब वो क्या हमसे जताने आये हैं।

कुछ कर गुज़र जाने की चाहत है दिल में

कारवाँ भी हमें खुद से मिलाने आये हैं।

खुली किताब है ये वाकिफ़ ज़िंदगी मेरी

आईने आख़िर क्या हैं जो सच्चाई बताने आये हैं।।

प्यार

अनिल कुमार के
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

कैसे शुक्रिया अदा करूँ मैं
भगवान तेरे प्यार का।
तेरे प्यार ने ही दुनिया को
इतना खूबसूरत बनाया है।।

तुमने तोहफे के रूप में
माता-पिता दिए मुझको
दिए इतने प्यारे रिश्तेदार
तोहफे के रूप में।।

तुमने दी सुंदर धरती
प्यार भरी जिंदगी मुझको
सब तुम्हारा ही दिया है
पर एक तोहफा जो तुमने दिया
है वो सबसे अनमोल।।

प्यार इस दुनिया में
है सबसे अनमोल तोहफा
प्यार के बिना जीवन सूना
यह दुनिया कितनी अधूरी हो जाएगी।।

कैसे अदा करू मैं
शुक्रिया तेरे प्यार का
तेरा प्यार ही इस दुनिया को
इतना रंगीन बनाता है।।

एन सजीव कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

अंडमान में बिताए खूबसूरत लम्हें....

अंडमान द्वीप समूह बंगाल की खाड़ी में स्थित एक भारतीय द्वीप समूह है। ये लगभग 300 द्वीपों के समूह हैं जो अपने ताड़ के वृक्षों की कतारों, सफेद रेतीले समुद्र तटों, सदाबहार और उष्णकटिबंधीय वर्षा वनों के लिए जाने जाते हैं। मैंने अंडमान के लिए 5 दिनों की यात्रा की योजना बनाई थी और मेरी यात्रा 08 नवंबर 2018 को शुरु हुई थी।

पहले दिन जब मैं अंडमान की राजधानी पोर्ट ब्लेयर पहुँचा, मैंने पोर्ट ब्लेयर में कई ऐतिहासिक स्थानों का दौरा किया। सेल्यूलर जेल (काला पानी), समुद्रिका समुद्री संग्रहालय, मानव विज्ञान संग्रहालय, चात्म सामिल, जापानी बंकर, आदि शामिल थे। यह वास्तव में एक अद्भुत अनुभव था। अगले दो दिनों में रोस द्वीप (नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वीप), हैवलॉक द्वीप (स्वराज द्वीप), नील द्वीप (शहीद द्वीप) आदि के लिए रवाना हुआ। अंडमान समुद्र तट पर्यटन के लिए रोमांचक जगह है। स्नोरकिलिंग, स्कूबा डाइविंग, पैरा सेलिंग आदि जैसी मौज-मस्ती भरी गतिविधियों के लिए प्रसिद्ध है। इनका आनंद मैंने हैवलॉक द्वीप में लिया और इस अनुभव को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता।

मेरी अंडमान यात्रा की अविस्मरणीय स्मृति बारतांग द्वीप यात्रा थी। लगभग 4 बजे, वन चौकी के पास वाहनों की लंबी कतार थी। यात्रा सुबह 6 बजे शुरु हुई। ड्राइवर ने मुझे सड़क पर ध्यान से देखने के लिए कहा क्योंकि रास्ते में जार्वा लोग होंगे। एक घंटे के बाद वाहन को धीमा करना शुरु कर दिया क्योंकि रास्ते में जार्वा लोग खड़े थे। उन्होंने मेरे ड्राइवर से बिस्कुट और सिगरेट के लिए पूछना शुरु किया। लेकिन ड्राइवर चतुर था उसने बताया कि वापस आते हुए सभी चीज़े लाऊंगा। पर उसने कुछ भी नहीं लिया और रास्ते में जार्वा लोग भी नहीं थे। जारवा जनजाति भारत के महत्वपूर्ण आदिवासी लोगों में से एक है और अंडमान निकोबार द्वीप समूह में रहते हैं। उनका मुख्य व्यवसाय फल और शिकार करना है। अपने भोजन के लिए समुद्र और जंगल में शिकार करते हैं। उन्हें शहर के लोगों जैसे कपड़े पहनना पसंद नहीं है। सरकार और सामाजिक कार्यकर्ता उन्हें समाज की मुख्य धारा में लाने की कोशिश कर रहे हैं।

बारतांग का मुख्य आकर्षण है चूना पत्थर की गुफाएं, ज्वालामुखी और स्वदेशी जारवा जनजाति के घर आदि। घने जंगल, जनजातियाँ, सदाबहार वन, समुद्र तट, पक्षी, गुफाएं और ट्रैकिंग...... हिंदुस्तान में ये सब एक ही जगह देखना हो तो अंडमान से अच्छी और कोई जगह नहीं है। वास्तव में पाँचवे दिन आते हुए मन ये कह रहा था कि हर हिंदुस्तानी को जिंदगी में कम से कम एक बार तो अंडमान में पर्यटन के लिए अवश्य आना चाहिए। इसकी प्राकृतिक सुंदरता, नैसर्गिक वातावरण, मनोरम दृश्य आदि बहुत कुछ सीखने को प्रेरित करते हैं।

नराकास के संयुक्त राजभाषा उत्सव के दौरान प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक अंक प्राप्त कार्यालय के लिए नराकास वैजयंती और प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) एवं सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा के पदाधिकारीगण

नराकास संयुक्त राजभाषा उत्सव के दौरान प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त करते हुए आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा कार्यालय के पदाधिकारीगण

विश्व विरासत सभ्यता - हम्पी

सुशीला पी वी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत को किसी ज़माने में सोने की चिड़िया कहा जाता था। तब भारत अपने वैभव और संस्कृति के लिए मशहूर था। तब भारत में हर तरह की सुविधा उपलब्ध थी और हमारा देश विकसित देशों की श्रेणी में आता था। लेकिन समय बदलते हमारे देश पर कई बाहरी ताकतों ने राज किया जिससे हमारे देश की हालत खराब हो गई।

इस अवस्था का एक उत्तम उदाहरण है कर्नाटक राज्य के उत्तर में स्थित हम्पी नगर जिसे यूनेस्को के विश्व विरासत स्थलों की सूची में शामिल किया है। हम्पी तुंगभद्रा नदी के तट पर स्थित है। यह प्राचीन शानदार नगर अब मात्र खंडहरों के रूप में ही बचा है। इस खंडहरों को देखने से यह सहज प्रतीत होता है कि किसी समय यहाँ एक समृद्ध एवं वैभवशाली सभ्यता निवास करती थी। घाटियों और टीलों के बीच पाँच सौ से अधिक स्मारक चिह्न हैं इनमें मंदिर, महल, तहखाने, जल खंडहर, पुराने बाज़ार शाही मंडप, गढ़, चबूतरे, राजकोष आदि बहुत सी इमारतें हैं, हम्पी मंदिरों की खूबसूरत श्रृंखलाओं का शहर है, जिसका नाम पम्पा (जो तुंगभद्रा नदी का पुराना नाम) से लिया गया था।

प्राचीन शहर हम्पी का ज़िक्र रामायण में भी किया गया है और इतिहासकारों के अनुसार इसे पम्पा और किशकिन्धा बुलाया जाता था। स्थानीय लोगों और लोक कथाओं के अनुसार इस क्षेत्र को रामायण में पौराणिक किशकिन्धा वानर राज्य कहा जाता था। इसी जगह पर राम और लक्ष्मण ने सीता की खोज के लिए लंका जाने से पहले शरण ली थी। पहाड़ों और कई स्थानों पर आज भी सुग्रीव, बाली, हनुमान और राम के रुकने की कहानियाँ हैं। शायद यही वजह है कि यहाँ कई बंदर हैं।

हम्पी का इतिहास प्रथम शताब्दी से प्रारंभ हुआ उस समय इसके आसपास बौद्धों का कार्यस्थल था और तृतीय शताब्दी के दौरान अशोक साम्राज्य का भाग था और बाद में हम्पी, विजयनगर (13 वीं से 16 वीं शताब्दी) साम्राज्य की राजधानी बना। विजयनगर हिन्दुओं के सबसे विशाल साम्राज्यों में से एक है। हरिहर और बुक्का नामक दो भाईयों ने 1336 ई. में इस साम्राज्य

की स्थापना की थी। कृष्णदेव राय ने 1509 से 1529 ई. के बीच हम्पी में शासन किया और अपने साम्राज्य का विस्तार किया। विजयनगर साम्राज्य के अंतर्गत कर्नाटक, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश के राज्य आते थे। कृष्णदेव राय की मृत्यु के बाद इस विशाल साम्राज्य को बीदर, बीजापुर, गोलकुंडा, आदि की मुस्लिम सेनाओं ने 1565 ई. में नष्ट कर दिया।

यह माना जाता है कि एक समय हम्पी रोम से भी समृद्ध नगर था। अपने खंडहरों की सुंदर वास्तुकला के अलावा अपने धार्मिक इतिहास के लिए भी प्रसिद्ध हम्पी कई मंदिर जैसे श्री विरूपाक्ष मंदिर, विजय विट्टला मंदिर, कडलेकालु मंदिर आदि के लिए भी प्रसिद्ध है।

इस शहर में बहने वाली नदी (तुंगभद्रा) और खंडहर मिलकर एक विस्मयदायक प्राकृतिक वातावरण प्रदान करते हैं। आसपास के पहाड़ों के प्राकृतिक पत्थर इन विशाल शिलाखंडों के स्त्रोत हैं जिसका इस्तेमाल विजयनगर के राजाओं ने हम्पी मंदिरों के प्रभावशाली पत्थरों के नक्काशीदार खंभों के लिए किया था। इस साम्राज्य की राजधानी के खंडहर संसार को यह घोषित करते हैं कि इसके गौरव के दिनों में स्वदेशी कलाकारों ने यहाँ वास्तुकला, चित्रकला एवं मूर्तिकला की शैली का विकास किया था।

मंदिरों और प्राकृतिक दृश्यों के अलावा, यहाँ बड़ी खूबसूरती के साथ बनाए गए कई पानी के ताल और अन्य सार्वजनिक भवन भी हैं, जो विजयनगर के राजाओं के नगर नियोजन कौशल को दर्शाता है। यहाँ के जलसेतु और नहरें 13 से 15 वीं सदी की जल प्रबंधन प्रणाली की एक सुंदर झलक प्रदान करते हैं।

अक्तूबर से मार्च की अवधि हम्पी पर्यटन के लिए उत्तम मानी जाती है। इसके रथ से सब परिचित ज़रूर हैं, इसे कहीं न कहीं.....कभी न कभी....आपने देखा होगा, पहचान लिया क्या ! कहां देखा है ?......नए पचास रूपये के नोट पर। सहीं कहा ना !!!

स्लीप पैरालिसिस

किरणदीप कौर

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

बहुत बार ऐसा होता है जब हम अधिक समय तक एक ही मुद्रा में बैठे रहते हैं हमारे शरीर के अंग जैसे पैर या टांग, बाज़ू आदि सुन्न हो जाते हैं। थोड़ा हिलाने-डुलाने पर पुन: पूर्ववत् हो जाते हैं। कुछ ऐसा ही हमारे मस्तिष्क के साथ भी होता है जिसे मनोविज्ञान की भाषा में स्लीप पैरालिसिस (नींद पक्षाघात) कहा जाता है। मनुष्य का मस्तिष्क बहुत ही जटिल प्रकियाओं से गुज़रता है। हमारे शरीर का संचालन मस्तिष्क के द्वारा ही होता है। सोते और जागते हुए भी मस्तिष्क के अलग-अलग भाग सक्रिय रहते हैं। मस्तिष्क से जुड़े क्रियाकलाप सदैव से ही विशेषज्ञों के लिए अनुसंधान का विषय रहे हैं। स्लीप पैरालिसिस पर भी आधुनिक मनोविज्ञान के आविर्भाव से पहले से शोध जारी हैं।

विशेषज्ञों के अनुसार स्लीप पैरालिसिस एक ऐसी अवस्था है जब मनुष्य का शरीर लकवाग्रस्त हो जाता है। वह हिलने-डुलने, बोलने की कोशिश करता है पर उठ या बोल नहीं पाता। जब कोई भी व्यक्ति सोता है तो तब मस्तिष्क, शरीर और मन को शक्तिहीन कर देता है ताकि वह आराम कर सके। कभी-कभी ऐसी स्थिति आ जाती है जब दिमाग तो जाग जाता है पर शरीर सोया रह जाता है। ज़्यादातर लोगों में यह कुछ ही देर में अपने आप ठीक भी हो जाता है। सभी को कभी न कभी इस समस्या से दो चार होना पड़ता है। यह निद्रा पैटर्न (सोने का तरीका) में असंतुलन की वजह से घटित होता है।

सभी लोगों में इसके लक्षण अलग-अलग हो सकते हैं। सोते या जागते समय लगातार कुछ सेकेंड या मिनट तक शरीर को ना हिला पाना। सोते हुए भी पूरी तरह होश में रहना। इस अवधि के दौरान बोल ना पाना। मतिभ्रम और शरीर में सनसनी होना जिससे डर महसूस होता है। कुछ लोग इसे भूत-प्रेत आदि पारलौकिक घटनाओं से जोड़ देते हैं। उन्हें ऐसा अनुभव होता है जैसे किसी पारलौकिक शक्ति ने उन पर आक्रमण कर दिया है। इस दौरान हृदयगति का असामान्य रूप से बढ़ जाना और छाती में दबाव महसूस होना, ऐसा महसूस होना जैसे कोई गला दबा रहा है, सांस लेने में परेशानी का अनुभव करना, ज़्यादा पसीना आना। अधिकतर मामलों में स्लीप पैरालिसिस सिर्फ एक ही बार होता है। यह आमतौर पर हानिकारक स्थिति नहीं है ना ही किसी अंदरूनी समस्या का संकेत। पर यदि रोज़ाना स्लीप पैरालिसिस महसूस हो, दिन के समय अधिक नींद आना, रात में सोने में कठिनाई या गहरी नींद में ना सो पाना तो चिकित्सक से परामर्श लेना आवश्यक हो जाता है।

नींद के दौरान शरीर शांत हो जाता है और खुद से काम करने वाली मांसपेशियां हिलना बंद कर देती हैं। रैपिड आई मूवमेंट (आर ई एम) नींद का ऐसा चरण होता है जिस दौरान मस्तिष्क काफी गतिशील रहता है और सपने भी आते हैं। इस दौरान आंखें और सांस लेने में मदद करने वाली मांसपेशियों को छोड़कर शरीर का कोई हिस्सा नहीं हिलता। पर स्लीप पैरालिसिस के दौरान नींद के रैपिड आई मूवमेंट में रूकावट

आती है। हर 10 में से 4 लोगों को स्लीप पैरालिसिस होता है। कुछ अन्य कारणों में पर्याप्त नींद ना ले पाना, नींद लेने के समय या आदत में किसी तरह का बदलाव, तनाव, नींद संबंधी अन्य समस्याएं जैसे नार्कोलेप्सी, कुछ प्रकार की दवाएं, नशीले पदार्थों का सेवन आदि शामिल है। पीठ पर टिककर सोना, बाइपोलर डिसआर्डर, जीवनशैली में बदलाव और अनुवांशिक कारणों से भी स्लीप पैरालिसिस हो सकता है। इन सब के अलावा भी प्रत्येक व्यक्ति जीवन में एक बार स्लीप पैरालिसिस का अनुभव करता है।

स्लीप पैरालिसिस के लिए कोई मेडिकल परीक्षण नहीं किया जाता। लक्षणों के आधार पर इसकी जाँच की जाती है। ज़्यादातर लोगों को इसका ईलाज करवाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। पर इसके कारण कुछ जटिलताएं विकसित हो जाती हैं। पर्याप्त नींद ना ले पाने के कारण थकान का अनुभव करना, रात को बुरे या डरावने सपने आना आदि।

इससे बचाव के लिए मनोचिकित्सक या विशेषज्ञ नींद की आदतों में सुधार करने का परामर्श देते हैं। लगभग 6 से 8 घंटे सोना आवश्यक है। किसी अन्य रोग की दवाइयों के दुष्प्रभाव की पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए क्योंकि कभी-कभी अन्य दवाइयां लेने के कारण भी नींद प्रभावित होती है या नींद के पैटर्न में बदलाव आ जाता है। इसके लिए विशेषज्ञ को अपनी मेडिकल हिस्टरी (चिकित्सा इतिहास) अवश्य बतानी चाहिए। जितना हो सके तनाव से बचें। अपनी दिनचर्या में योग और व्यायाम के लिए समय निकालें। नशे आदि व्यसनों से दूर रहें। अपना व्यवहार और सोच सकारात्मक रखें। निश्चय ही स्लीप पैरालिसिस पर काफी हद तक काबू पाया जा सकता है।

ऑल इंडिया सिविल सर्विसेज़ टेबल-टेनिस टूर्नामेंट 2019-20 में कांस्य पदक विजेता

श्री सेंथिल कुमार आर. सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2019

महालेखाकार (सा.सा.क्षे.ले.प) महालेखाकार (आ.रा.क्षे.ले.प) एवं महालेखाकार (ले व ह) के कार्यालयों के संयुक्त तत्वाधान में दि.02.09.2019 से 18.09.2019 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह आयोजित किया गया । अधिकारियों के लिए राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम इस दौरान आयोजित किया गया था।

हिंदी पखवाड़ा समारोह का उद्घाटन दि.02.09.2019 को श्रीमती जी सुधर्मिनी, महालेखाकार की अध्यक्षता में किया गया । श्री को.प. आनंद, महालेखाकार (आ.रा.क्षे.ले.प.) भी बैठक में उपस्थित रहे । पखवाड़ा समारोह समिति के संयोजक डॉ अनीष डी, वरि. उप महालेखाकार ने प्रतिष्ठित सभा का स्वागत किया । महालेखाकारों, श्रीमती जी सुधर्मिनी और श्री को.प. आनंद द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ समारोह का शुभारंभ किया । श्रीमती जी सुधर्मिनी, महालेखाकार ने अपने अध्यक्षीय भाषण से समारोह का औपचारिक उद्घाटन किया और अपने उद्बोधन में उन्होंने कार्यालय के राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी कार्यकलापों की सराहना की । तदुपरांत श्री को.प. आनंद, महालेखाकार ने आशीर्वाद भाषण से सभा को अनुग्रहित किया और कर्मचारियों से प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़ कर भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया । श्री एन वी मात्तच्चन, उप महालेखाकार के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ उद्घाटन सभा संपन्न हुई ।

पखवाड़े के सिलसिले में तीनों कार्यालयों के अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए दिनांक 02.09.2019 से 18.09.2019 तक हिंदी में सुलेखन, श्रुत लेखन, प्रशासनिक शब्दावली, वर्णानुक्रम, निबंध लेखन, अंग्रेज़ी से हिंदी में और विलोमत: अनुवाद, टिप्पण एवं मसौदा लेखन, हिंदी गीत, कथा रचना, कविता रचना, कविता पाठ, आशुभाषण, हिंदी वाचन, प्रश्नोत्तरी, अंताक्षरी और डिबेट आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं । तीनों कार्यालयों के संयुक्त तत्वाधान में दि. 17.09.2019 को पूर्वाह्न 10:30 बजे से अपराह्न 01:00 बजे तक अधिकारियों के लिए राजभाषा जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया ।

दि.18.09.2019 को सुबह 11:00 बजे पखवाड़ा समारोह का समापन सम्मेलन आयोजित किया गया। श्रीमती जी सुधर्मिनी, महालेखाकार (ले व ह) और श्री को.प. आनंद, महालेखाकार (आ.रा.क्षे.ले.प) भी समारोह में उपस्थित रहे। श्री एन वी मात्तच्चन, उप महालेखाकार के स्वागत भाषण के साथ सभा का शुभारंभ हुआ।

श्रीमती के आर रोहिणी, हिंदी अधिकारी ने भारत के आदरणीय गृह मंत्री के संदेश का पठन किया। श्रीमती जी सुधर्मिनी, महालेखाकार ने अपने अध्यक्षीय भाषण से सभा की गरिमा बढाई।

हिंदी पखवाड़े के सिलसिले में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को महालेखाकारों ने पुरस्कार वितरित किए। प्रतियोगिताओं के विजेताओं द्वारा मनोरंजन स्वरूप गीत और कविताएं प्रस्तुत की गईं। श्री अनीष डी, वरि. उप महालेखाकार ने हिंदी पखवाड़ा समारोह 2019 को सफल बनाने के लिए दिए गए योगदान के लिए सभी को धन्यवाद अर्पित किया। राष्ट्रगान के साथ सभा समाप्त हुई।

प्रोत्साहन योजना में पुरस्कार प्राप्त पदाधिकारीगण

सामान्य व सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा कार्यालय

प्रथम- श्रीमती सी जी सुजाता

पर्यवेक्षक

प्रथम- श्रीमती राखी पी ओ

स.ले.प.अ.

आर्थिक व राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा कार्यालय

प्रथम- श्रीमती कृष्णा कला

स.ले.प.अ.

द्वितीय- श्रीमती रश्मि शशिकुमार

व.ले.प.

तृतीय- श्री वैभव सिंह

डी ई ओ

द्वितीय- श्री जे.ए. साई कुमार

व.ले.प.

द्वितीय- श्री अभिजीत नम्बियार

लेखापरीक्षक

रेल यात्राएँ - नॉसटेल्जिया

शाहनवाज़ नज़ीर मोहम्मद

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

एक रेल कर्मचारी का सुपुत्र होने की वजह से बचपन से मेरा रेल से नाता रहा है। पिताजी गुजरात में थे इसलिए हर साल एक दो बार केरल आना जाना होता था। उन दिनों मुझे लगता था कि हर रेलगाड़ी की अलग-अलग गंध होती है। मेरा ये सौभाग्य रहा है कि नैरो गेज (जैसे कालका शिमला गाड़ी) मीटर गेज (अब कहीं भी नहीं) और ब्रॉड गेज और कोयला डीज़ल ओर बिजली से चलने वाली गाडियों में सफ़र करने का मौका मुझे मिला।

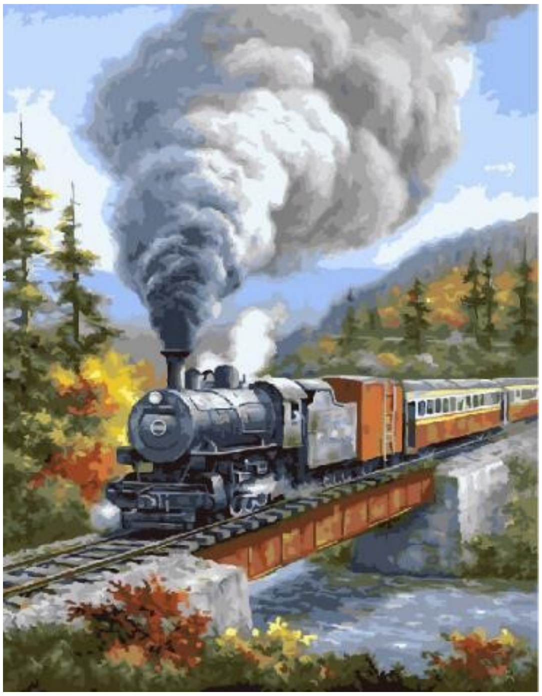

उन दिनों कंप्यूटर मोबाइल इत्यादि साधन नहीं थे. इसलिए रिजर्वेशन के लिए टेलीग्राम किया जाता था। रिज़र्वेशन कन्फर्म होने का कोई भरोसा नहीं होता था। मगर पिताजी रेलवे में होने के कारण हमेशा रिज़र्वेशन मिल जाता था।

उन दिनों रेल गाडियों में तीन दर्जे हुआ करते थे। पहला, दूसरा, ओर तीसरा। पहले दर्जे में कुशन सीट, अलग कमरा और एक चपरासी हुआ करता था। दूसरा दर्जा रिज़र्वेशन ओर तीसरे दर्जे में तो सिर्फ बैठने के लिए लकड़ी की बेंच जैसी सीट हुआ करती था।

गाड़ी स्टीम इंजन से चलती थी। ये इंजन देखने लायक चीज़ होती थी। एकदम भीमकाय, दमदार आवाज़ धुँआ, आग, सफ़र के अंत में कपड़े और शरीर दोनों काले-काले हो जाते थे। फिर भी सीटी बजाती धुआं उड़ाती गाड़ी की वो दौड़ बहुत ही आकर्षक होती थी। आज जैसे दूर-दूर सफर केलिए एक ही गाड़ी नहीं होती थी। दो-दो, तीन-तीन गाड़ियां बदलनी पड़ती थी। बड़े-बड़े स्टेशनों पर इंजन में पानी भरने के लिए ट्रेन रुका करती थी। हर स्टेशन की अपनी खूबियाँ हुआ करती थी। कोई-कोई स्टेशन अपने स्वादिष्ट खाने के लिए मशहूर हुआ करते थे, नियमित यात्रियों को इन चीज़ों के बारे में पता होता था।

लम्बे सफ़र की गाड़ियां जो तीन चार दिन लेती थीं उनमें खाने का ऑर्डर लिया जाता था और अगले स्टेशन में सप्लाई किया जाता था। कभी-कभार ऑर्डर और पैसे दोनों गायब हो जाते थे। किसी किसी गाड़ी में पैंट्री कार हुआ करता था और उन में क्षेत्र वार मस्त खाना मिलता था। जिसका स्वाद आज भी महसूस होता है। आज कल तो सभी ट्रेनों में एक जैसा ही खाना मिलता है।

पानी आज जैसे बोतल में नही बल्कि रेलवे स्टेशन में जल गृह हुआ करता था, जहां मटकों में पानी रखा जाता था और पानी को थैले में भर के दिया जाता था, ठंडक के लिए थैले को ट्रेन की खिड़की के बाहर टांग दिया जाता था, पानी का पैसा स्वेच्छा से दिया जाता था। चलती गाड़ी में पानी पीना किसी साहसी काम से कम नहीं था, गाड़ी इतनी हिलती थी कि मुंह में कम कपड़ों पर ज़्यादा गिरता था। गाड़ियाँ इतने सहीं समय पर चलती थीं कि हमारी कनेक्शन वाली ट्रेन कभी मिस नहीं हुई। समय बीतता गया – स्टीम इंजन से डीज़ल और डीज़ल से इलेक्ट्रिक इंजन आ गया. कंप्यूटर इत्यादि नई-नई तकनीक के बावजूद गाड़ियां अपने समय पर नहीं चल पाती हैं.

सुविधाएं बढ़ती गईं मगर आजकल के सफ़र में उन दिनों जैसा मज़ा कहाँ? अब तो लोग हवाई जहाज़ से उड़ने लगे– बस बैठे और पहुँच गए जहाँ जाना था।

****

राजस्थान की धरोहर- बावड़ियां

राजस्थान अपने खूबसूरत महलों, हवेलियों, दुर्गों के साथ-साथ प्राचीन बावड़ियों के लिए भी जाना जाता है । बावड़ियों को देखने पर कोई भी अचम्भित हुए बिना नही रह सकता ।

अनिल शर्मा

वरि. लेखापरीक्षक

बावड़ी उन सीढ़ीदार कुँओं या तालाबों को कहते हैं जिन के जल तक सीढ़ियों के सहारे आसानी से पहुँचा जा सकता है । भारत में बावड़ियों को बनाने और उनके इस्तेमाल का लंबा इतिहास रहा है, ये वो सीढ़ीदार कुएं या तालाब हुआ करते थे, जहां से जल भरने के लिए सीढ़ियों का सहारा लेना पड़ता था । बावड़ियां हमारी प्राचीन जल संरक्षण प्रणाली का आधार रही हैं - दूर से देखने पर ये तलघर के रूप में बनी किसी बहु मंज़िला हवेली जैसी दिखाई देती हैं ।

आज हम बात करेंगे, राजस्थान की खूबसूरत 'बावड़ियों' के बारे में, जिनकी सरंचना व वास्तुकला, किसी का भी मन मोह सकती हैं । हमारे साथ जानिए राजस्थान स्थित प्रसिद्ध बावड़ियों के बारे में, जो अब खूबसूरत पर्यटन स्थल बन चुकी हैं ।

कुछ दर्शनीय बावड़ियाँ

चाँद बावड़ी

चांद बावड़ी, राजस्थान के दौसा जिले के आभानेरी गांव स्थित 'चांद बावड़ी', को दुनिया की सबसे गहरी बावड़ी का दर्जा प्राप्त है, जिसका निर्माण राजा मिहिर भोज ने करवाया था। 13 मंजिला वाली इस बावड़ी की गहराई 100 फीट से भी ज्यादा है, जिसमें 3500 सीढ़ियां बनी हुई हैं। इन सीढ़ियों को भूलभुलैया भी कहा जाता है। चांदनी रात में इस बावड़ी का पानी दूधिया सफेद जैसा नजर आता है। अपनी गहराई के चलते इसे 'अंधेरे-उजाले की बावड़ी' भी कहा जाता है, इस पूरी बावड़ी को

खूबसूरत कला से सजाया गया है, जगह-जगह आकर्षक

कलाकृतियां की गई हैं। बावड़ी के नीचे किसी गुप्त सुरंग के बारे में भी पता चला है, जिसका इस्तेमाल शायद आपातकालीन परिस्थितियों में किया जाता था ।

रानी जी बावड़ी बूंदी

राजस्थान के बूंदी स्थित 'रानी जी बावड़ी' की गिनती खूबसूरत बावड़ियों में की जाती है। लगभग 46 मीटर गहरी यह बावड़ी अपनी आकर्षक नक्काशी व संरचना के लिए जानी जाती है। बावड़ी तक पहुंचने के लिए एक भव्य प्रवेश द्वार को पार करना होता है, जहां से घुमावदार खंभे और चौड़ी सीढ़ियां शुरु होती हैं। यहां लगभग 100 सीढ़ियां बनी हुईं हैं। यहां भारतीय व मुगलकालीन स्थापत्य कला का अनूठा उदाहरण देखा जा सकता

है। अब यह बावड़ी भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित है।

नीमराना की बावड़ी

नीमराना राजस्थान के अलवर जिले का एक प्राचीन शहर हैं, जो अपने ऐतिहासिक किले के लिए जाना जाता है। नीमराना, अपनी प्राचीन बावड़ियों के लिए भी प्रसिद्ध है जिसका निर्माण राजा टोडरमल ने करवाया था। यह एक नौ मंजिला बावड़ी है जिसकी लंबाई लगभग 250 फुट व चौड़ाई 80 फुट होगी। इस बावड़ी का आकार इतना बड़ा था कि समय आने पर सेना की एक छोटी टुकड़ी को इसमें आसानी से छुपाया जा सकता था। नीचे की तरफ आते-आते इस बावड़ी में तापमान में गिरावट शुरू हो जाती है। इस बावड़ी को खूबसूरत आकृतियों से सजाया गया है। अगर आप नीमराना जाएं, तो इस ऐतिहासिक बावड़ी को देखना न भूलें।

पन्ना मीना की बावड़ी

राजस्थान का जयपुर अपने खूबसूरत महलों के साथ-साथ प्राचीन बावड़ियों के लिए भी जाना जाता है, जिन्हें देखने के लिए देश-दुनिया से पर्यटक आते हैं। जयपुर के आमेर स्थित पन्ना मीना बावड़ी एक प्राचीन संरचना है, जो अपनी खूबसूरत कलाकृतियों के लिए जानी जाती है। जहां यह बावड़ी है वह क्षेत्र (आमेर) कभी जयपुर की प्राचीन राजधानी हुआ करता था। इस खूबसूरत बावड़ी के एक ओर जयगढ़ दुर्ग है, जिसे सैनिक इमारतों में से एक माना जाता है और दूसरी ओर खूबसूरत पहाड़ी। इस बावड़ी का निर्माण 17वीं शताब्दी के आसपास करवाया गया था। यह बावड़ी अपनी अद्‌भुत सीढ़ियों व अष्टभुज किनारों व बरामदों के लिए प्रसिद्ध है।

हाड़ी रानी की बावड़ी

हाड़ी रानी की बावड़ी, टोंक जिले के टोडरसिंह शहर में स्थित एक प्राचीन बावड़ी है, जिसका निर्माण बूंदी की राजकुमारी हाड़ी ने करवाया था। ऐसा माना जाता है, इसका निर्माण 16 वीं शताब्दी के आसपास हुआ होगा। यह बावड़ी नीचे की ओर आयातकार रूप में बनी हुई है। बावड़ी में दो मंजिला गलि-यारें भी हैं, जिनके एक-एक ओर खूबसूरत मेहराव/ खूबसूरत विश्राम बने हुए हैं, जो अपनी ठंडक के लिए प्रसिद्ध हैं। बावड़ी की निचली मंजिल पर ब्रह्मा, गणेश और देवी महिषासुर मर्दिनी की मूर्तियां स्थापित की गई हैं।

31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष के लिए भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक का प्रतिवेदन (राज्य वित्त) केरला सरकार का कार्यकारी संक्षेप

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भारत के दक्षिणी छोर पर स्थित केरला राज्य तमिलनाडु एवं कर्नाटक के साथ अपनी सीमा बाँटता है । भौगोलिक क्षेत्र की दृष्टि से 38,863 कि.मी के विस्तार के साथ केरला देश में 22 वें स्थान पर है । केरला की आबादी 3.60 करोड़ (देश में बारहवां स्थान) है और प्रति कि.मी 860 व्यक्तियों के साथ यह तीसरा सघन आबादी वाला राज्य है । आबादी की दशकीय वृद्धि दर 6.0 प्रतिशत थी (वर्ष 2008 के 3.40 करोड़ से वर्ष 2017 में 3.60 करोड़ तक) जो कि भारतीय राज्यों में दूसरी न्यूनतम दर है। केरला की साक्षरता दर (94 प्रतिशत) भारतीय राज्यों में उच्चतम है। वर्ष 2017-18 में राज्य सकल घरेलू उत्पाद, चालू दामों में ₹6,86,116 करोड़ था ।

रिपोर्ट के बारे में

केरला सरकार की वित्त संबंधी यह रिपोर्ट वर्ष 2017-18 के दौरान राज्य के वित्तीय निष्पादन का वस्तुनिष्ठ रूप से मूल्यांकन करने तथा राज्य सरकार तथा राज्य विधान सभा को वित्तीय आंकड़ों के लेखापरीक्षा विश्लेषण के आधार पर सामयिक निविष्टियां प्रदान करने की दृष्टि से तैयार की जाती है । विश्लेषण को परिप्रेक्ष्य प्रदान करने के लिए बजट अनुमान 2017-18 में राज्य सरकार द्वारा परिकल्पना किए गए लक्ष्यों और उनकी उपलब्धियों की तुलना करने का प्रयास किया गया है । मार्च 2018 को समाप्त वर्ष के लिए केरला सरकार के लेखापरीक्षित लेखाओं के आधार पर यह रिपोर्ट राज्य सरकार के वार्षिक लेखाओं की विश्लेषणात्मक समीक्षा प्रदान करती है । इस रिपोर्ट के तीन अध्याय हैं ।

अध्याय 1 वित्त लेखाओं की लेखापरीक्षा पर आधारित है तथा 31 मार्च 2018 तक की स्थिति के अनुसार केरला सरकार की वित्तीय स्थिति का निर्धारण प्रस्तुत करता है । यह वचनबद्ध व्यय, उधार पैटर्न तथा व्यय की गुणता की प्रवृत्तियों संबंधी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है और साथ ही अन्य सामान्य वर्ग के राज्यों के साथ राज्य के व्यय का तुलनात्मक चित्र प्रस्तुत करता है।

अध्याय 2 विनियोग लेखाओं की लेखापरीक्षा पर आधारित है और विनियोगों का अनुदान-दर-अनुदान विवरण देता है और यह भी बताता है कि किस तरीके से आबंटित संसाधनों का प्रबंधन, सेवा वितरण विभागों द्वारा किया गया था ।

अध्याय 3 विभिन्न रिपोर्टिंग अपेक्षाओं तथा वित्तीय नियमों का केरला सरकार द्वारा अनुपालन का आविष्करण है ।

निष्कर्षों के समर्थन में विभिन्न सरकारी विभागों/संगठनों से एकत्रित आंकडे भी रिपोर्ट में समेकित है ।

लेखापरीक्षा निष्कर्ष तथा सिफ़ारिश

अध्याय 1 : राज्य सरकार के वित

समग्र वित्तीय स्थिति

राजस्व घाटे में, वर्ष 2016-17 के ₹15,484 करोड़ से 2017-18 के ₹16,928 करोड़ तक वृद्धि हुई और वित्तीय घाटा वर्ष 2016-17 के ₹26,448 करोड़ से 2017-18 के ₹26,838 करोड़ तक बढ़ गया । सकल राज्य घरेलू उत्पाद के साथ वित्तीय घाटे का अनुपात वर्ष 2016-17 के 4.3% से 2017-18 के 3.9% तक बढ़ गया । वर्ष 2017-18 के दौरान राज्य द्वारा अपने मध्यावधि वित्तीय योजना में या केरला फिस्कल रेस्पान्सिबिलिटी एक्ट में निर्धारित किसी भी लक्ष्य को उपलब्ध नहीं किया गया था । चौदहवें वित्त आयोग की सिफारिशों के आधार सकल राज्य घरेलू उत्पाद के अनुपात में वित्तीय घाटे को 3 प्रतिशत तक स्थिर रखना था लेकिन वर्ष 2017-18 के दौरान यह 3.9 प्रतिशत था

Dedicated to Truth in Public Interest

राज्य के राजस्व संसाधन

राज्य की राजस्व प्राप्तियां वर्ष 2013-14 के ₹49,177 करोड़ से 2017-18 में ₹83,020 करोड़ तक बढ़ गयी जो कि पिछले पांच वर्षों के दौरान 69 प्रतिशत की वृद्धि दर को अंकित करती है। राज्य के अपने कर राजस्व का हिस्सा, राजस्व प्राप्तियों में राजस्व का मुख्य स्रोत होते हुए वर्ष 2013-14 के 65% से 2017-18 में 56% तक घट गया जो राजस्व प्राप्तियों के अन्य घटकों से तुलना करें, तो कर राजस्व की निम्न वृद्धि दर की ओर इशारा करता है। यद्यपि राज्य लॉटरियों के अंतर्गत प्राप्तियां ₹9,034 करोड़ थी (करेत्तर राजस्व का 81 प्रतिशत), ₹7,628 करोड़ के समतुल्य उच्च व्यय ईनामों के वितरण, एजेंट दलाली आदि पर हुआ था जो वर्ष के दौरान निवल लाभ को ₹1,406 करोड़ तक घटाया था।

राज्य के राजस्व व्यय

राज्य के राजस्व व्यय, वर्ष 2016-17 के ₹91,096 करोड़ से वर्ष 2017-18 में ₹99,948 करोड़ तक बढ़ गया जो पिछले वर्ष से परे 9.72% की वृद्धि को अंकित करता है। वर्ष 2017-18 के दौरान कुल व्यय के प्रतिशत के तौर पर राजस्व व्यय बढ़ गया था जो पूंजीगत व्यय को लेकर सरकार की कम प्राथमिकता को दर्शाता है। राजस्व व्यय में प्रतिबद्ध व्यय का हिस्सा वर्ष 2016-17 के 63 प्रतिशत से वर्ष 2017-18 में 69 प्रतिशत तक बढ़ गया। ब्याज भुगतान तथा पेंशन भुगतान में राजस्व प्राप्तियों के क्रमश: 18 प्रतिशत और 24 प्रतिशत की खपत हुई और यह राज्य के लिए चिंता का एक विषय है।

व्यय की गुणता

वर्ष के दौरान पूंजीगत व्यय ₹1,377 करोड़ तक घट गया और कुल व्यय में उसके हिस्से वर्ष 2016-17 के 10% से वर्ष 2017-18 में 8 प्रतिशत तक घट गए। स्वास्थ्य तथा शिक्षा क्षेत्र पर कुल व्यय में राज्य के हिस्से का व्यय, सामान्य वर्ग राज्यों से अधिक था, लेकिन कुल व्यय में पूंजीगत व्यय तथा विकास व्यय का हिस्सा सामान्य वर्ग के राज्यों के हिस्से से कम था। राज्य सरकार द्वारा निवेश पर औसत लाभ पिछले पांच वर्षों में 1.44% था जबकि उसी अवधि के दौरान अपनी उधार राशियों पर सरकार ने 7.24% की ब्याज दर अदा की थी। राज्य सरकार द्वारा दिए गए ऋण एवं अग्रिमों पर ब्याज प्राप्ति, वर्ष 2017-18 के दौरान 7.48% के उधार की औसत लागत के 0.25% थी।

आरक्षित निधि एवं देयताएं

समेकित ऋण शोधन निधि सरकार की बकाया देयताओं को चुकाने के उद्देश्य से गठित की थी, लेकिन वर्ष 2017-18 के दौरान सरकार ने निधि के लिए कोई अंशदान नहीं दिया। उसी प्रकार, सरकार को उनके द्वारा दी गयी गारंटियों से उत्थित होने वाली भविष्य देयताओं को पूरा करने के लिए एक गारंटी मुक्त निधि भी गठित करनी है। यह निधि अब तक गठित नहीं की गयी है। मार्च, 2018 तक, राज्य आपदा प्रतिक्रिया निधि की संचित शेष राशि ₹287.08 करोड़ थी। मार्गदर्शी सिद्धांतों के अनुसार, भारतीय रिज़र्व बैंक की ऑवरड्राफ्ट विनियमन योजना के अंतर्गत ऑवरड्राफ्ट के लिए लागू ब्याज दर की राशि की समतुल्य राशि सरकार को निधि में जमा करनी है। तथापि, ऐसा नहीं किया गया है। पूर्व वर्षों में निधि के अनिवेशित शेष राशियों पर अदा करने योग्य ब्याज का आकलन भी सरकार द्वारा तैयार नहीं किया गया था।

ऋण प्रबंधन

राज्य की कुल वित्तीय देयताओं का मुख्य हिस्सा खुले बाज़ार से उधार राशि से बनता है। वर्ष 2017-18 के दौरान विकास कार्यकलापों के लिए राज्य के पास उपलब्ध निवल ऋण, केवल ₹6164 करोड़ (सार्वजनिक ऋण प्राप्तियों का 26%) था। राज्य का परिपक्वता अवधि विन्यास दर्शाता है कि ऋण के लगभग 50.14% (₹71,698 करोड़), मार्च 2025 तक वापस करना है।

राज्य सरकार ने दि. 01.01.2004 को या उसके बाद केरला संवर्ग में भर्ती हुए अखिल भारतीय सेवा अधिकारियों (जुलाई

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

राष्ट्रीय पेंशन योजना का कार्यान्वयन

2009) तथा दि. 01.04.2013 को या उसके बाद नियुक्त राज्य सरकारी कर्मचारियों(जनवरी 2013)के लिए राष्ट्रीय पेंशन योजना(एन पी एस) अमल की । राज्य सरकारी कर्मचारियों के संबंध में बैकलॉग योगदान के लिए सरकार के शेयर के समतुल्य राशि के ब्याज सरकार द्वारा प्रदान नहीं किया जाना, ए आई एस अधिकारियों के संबंध में एन पी एस बैकलॉग योगदान के अंतरण में हुए 27 से 41 महीनों तक का विलंब, कर्मचारियों के लिए संवितरित वेतन संशोधन की बकाया राशियों से एन पी एस अंशदान की कटौती न करना आदि जैसी न्यूनताएं एन पी एस के कार्यान्वयन में ध्यान में आयी थी।

अनुदान की अवधि (2015-18) के पहले तीन वर्षों के लिए चौदहवें वित्त आयोग अनुदान की प्राप्ति तथा उपयोग

वर्ष 2015-16 से 2017-18 तक की अवधि के दौरान ₹13,560.08 करोड़ की अनुदान राशि में से राज्य को ₹13,308.28 करोड़ प्राप्त हुआ जिसके परिणामस्वरूप भारत सरकार से ₹251.80 करोड़ की अल्प प्राप्ति हुई । अल्प निर्मोचन 'स्थानीय निकायों के लिए अनुदान' के तहत ध्यान में आया था।

अध्याय II : वित्तीय प्रबंधन तथा बजटीय नियंत्रण

वर्ष 2017-18 में ₹44,881.94 करोड़ के कुल बजट आबंटन के विरुद्ध ₹11,424.97 करोड़ (7.89%) की समग्र बचत 7.60% थी जो कि 2016-17 के दौरान देखी गयी बचत (15.49 प्रतिशत) से कम थी । राजस्व खण्ड के तहत आठ अनुदानों में तथा पूंजीगत खण्ड के तहत पांच अनुदानों एवं एक विनियोग में 100 करोड़ से अधिक की स्थायी बचत ध्यान में आयी थी । पिछले वर्षों (वर्ष 2011-12 से 2016-17 तक) से संबंधित ₹1,189.56 करोड़ के अधिक व्यय के साथ-साथ वर्ष 2017-18 के दौरान छः अनुदानों तथा विनियोगों के तहत हुए ₹3,545.44 करोड़ के अधिक व्यय को, संविधान के अनुच्छेद 205 के अंतर्गत नियमित किया जाना है। चूंकि मूल प्रावधानों के स्तर तक भी व्यय न होने के कारण, 12 अनुदानों/ विनियोगों में प्राप्त कुल मिलाकर ₹2,417.30 करोड़ के अनुपूरक प्रावधान अनावश्यक सिद्ध हुई । वर्ष 2017-18 के दौरान, वित्त वर्ष के अंत तक कुल बजट आबंटन के 11% को अभ्यर्पित किया गया था जिसमें ₹1000 करोड़ से अधिक अभ्यर्पण वाले पांच अनुदान भी शामिल हैं । अनावश्यक तथा अविवेकपूर्ण पुनर्विनियोजन सूचित करता है कि विभागीय अधिकारीगण अपने नियंत्रणाधीन लेखाशीर्ष में निधियों की वास्तविक आवश्यकता निर्धारित करने में विफल रहे । कोषागार निरीक्षण में आहरण एवं संवितरण अधिकारियों द्वारा पेंशन के अधिक भुगतान तथा अग्रिमों के गैर-निपटान ध्यान में आए थे।

अध्याय III : वित्तीय रिपोर्टिंग

नियंत्रक महालेखापरीक्षक (कर्तव्य, शक्तियां एवं सेवा शर्तें) अधिनियम, 1971 की धारा 19(2), 19(3) तथा 20(1) के तहत, डिस्ट्रिक्ट लीगल सर्विस अर्थॉरिटी, एर्नाकुलम तथा कासरगोड़ के लेखाओं की लेखापरीक्षा, भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक को सुपुर्द की गयी थी जो कि पांच वर्षों (2012-2013 से) के लिए लंबित थी।

गबन/ दुर्विनियोजन, चोरी, हानि आदि मामलों के संबंध में दीर्घकाल से लंबित वसूली

सार्वजनिक धन के दुर्विनियोजन/हानि के मामलों के संबंध में विभागीय कार्रवाई आरंभ करने, देयता चुकाने, वसूली आदेश जारी करने आदि में विलंब हुए थे।

गणतंत्र दिवस समारोह की झलकियाँ

आपसी बातें

केवल कुमार मकवाना

वरि. लेखापरीक्षक

लड़के वाले लड़की को देखने आए,
लड़की वालों ने उन्हें बिठाकर नत्थूलाल के बासी समोसे खिलाए।
समोसे तो थे बासी,
उस पर लड़के को हो गई खासी,
फिर भी लड़के वालों ने सारे समोसे खाए
और जो ना खा सके उन्होंने अपने पॉकेट में छिपाए,
अरे छिपते क्यों नहीं आख़िर मुफ़्तखोरी का तो ज़माना है।
फिर लड़की वालों ने अपनी बेटी की तारीफ़ चालू की,
साथ ही साथ सब्ज़ी परोसी टिंडे करेले और आलू की,
बोले सारा खाना इसी ने बनाया है,
किसको पता था कि जनाब स्विगी से मंगाया है।
बोले कि हमारी बेटी बड़ी स्ट्राँग है,
एक दम अंबुजा सीमेंट जैसी,
आपके घर को एक दम कड़क कर देगी।
इतनी संस्कारी है, जिसको भी देखती है बस एक नज़र से देखती है,
बाद में भले ही उस पर अपनी चप्पल फेंकती है।
लड़के वाले भी अब कैसे पीछे रहते,
लड़का कुछ करता तो नहीं था पर यह कैसे कहते।
कहते हैं इतना सुशील, इतना सरल है हमारा बेटा,
जैसे गाड़ियों में होती है होंडा।
सबकी बात बड़े धैर्य से सुनता है,
और उल्टे मुँह कभी भी जवाब नहीं देता है।
तो फिर रिश्ता हो गया पक्का,
लड़की वालों ने परोसा आगरा का मीठा।
साथ ही साथ परोसे बहुत सारे पुराने बादाम,
इम्प्रेशन जो जमाना है, उसी का तो है असली दाम।
लड़के की माँ बोली बस बस चार पांच खा चुके हैं अब और नहीं

तो लड़की की माँ बोली- जी वैसे खा तो नौ दस चुके हैं,

पर गिनता कौन है जी।

फिर हो गई शादी पक्की,

सभी बारातियों ने उड़ाई अपने प्यालों से मक्खी,

पक्का किसी ना किसी की पिसने वाली थी चक्की।

शादी की रात हुआ सच्चाई का खुलासा,

कि दोनों पक्ष दे रहे थे एक दूसरे को झांसा,

ना जाने अंधेरे ने क्या ढूंढा,

लड़की निकली एक आंख से कानी और लड़का गूंगा।

सोचने की बात है सच छुपाकर क्या मिला,

खाली हुआ शिकवा गिला,

है सच बोलना ना इतना आसान,

पर उसी में है हमारा सच्चा अभिमान।।

फिर भी दुनिया में यही चलता है,

पर्दे के पीछे तो हर कोई हीरो बनता है।

और उससे हम हो जाते हैं प्रभावित,

जिससे खुद हमारा आत्मविश्वास खलता है।

आज कोई सच नहीं बोलता,

अपनी कमज़ोरियों का पिटारा कोई नहीं खोलता।

दिखावा करना जैसे अब सबपे एक जुनून है,

सबको मिलता अब इसी में सुकून है।

सबको परवाह है किसी दूसरे के ताज की,

भले ही हालात कितनी भी खराब हो खुद के काम-काज की।

यही समस्या है समाज की,

यही समस्या है आज की।।

खेल

हमारे जीवन में खेल का उतना ही महत्व है जितना जीने के लिए बाकी चीज़ों का जैसे हवा, पानी खाना इत्यादि । इस बात को हमें समझने की आवश्यकता है ।

खेलों से हमारी शारीरिक क्षमता बढ़ती है मन स्वस्थ रहता है सोचने समझने की शक्ति बढ़ती है एक प्रतिस्पर्धा की भावना मन में जागृत होती है जो हमारे जीवन को आगे बढ़ाने में मददगार साबित होती है । नकारात्मक विचारों का नाश करने में भी खेलों का बहुत बड़ा योगदान होता है। कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि व्यक्ति के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास खेलों के माध्यम से होता है । कोई भी खेल अकेले नहीं खेला जाता । एक सहयोगी की आवश्यकता होती है । इससे हमें सबसे मिलजुलकर रहने की सीख मिलती है । बचपन से ही बच्चों को पढ़ाई में इतना व्यस्त कर दिया जाता है कि उन्हें खेलने के लिए अवसर ही नहीं प्राप्त होते, और बच्चे बाहर खेलने के बजाय मोबाईल में घंटों व्यस्त रहते हैं जो कि उनके शारीरिक के साथ-साथ मानसिक विकास के लिए भी बेहद नुकसानदायक है। पालकों को चाहिए कि अपने बच्चों में खेलों के प्रति रुचि पैदा करें।

समाज कई प्रकार के विचारों वाले व्यक्तियों का समूह होता है। इन सभी अलग-अलग विचारों का समायोजन करके एक समूह बनता है और समूह बनाने का कार्य खेल के माध्यम से पूरा किया जा सकता है । अगर हमारा रूझान बचपन से ही खेलों के प्रति रहे तो हमें कोई एक खेल में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है जिससे शरीर और मन को सकारात्मक ऊर्जा मिलती है । देश-प्रेम को बढ़ावा देने में भी खेलों का बड़ा योगदान है, अगर किसी एक खेल को अपना लक्ष्य मानकर हम प्रयास करें तो राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय खेलों में हम अपने देश का नाम रोशन कर सकते हैं ।

अंत में मैं यही कहूंगा कि व्यक्ति के सम्पूर्ण शारीरिक व मानसिक विकास में खेलों का बहुत बड़ा योगदान है । अत: अपनी व्यस्त ज़िंदगी में थोड़ा वक़्त खेलकूद के लिए भी निकालें ।खेल हमें बहुत से रोगों से सुरक्षित रखने में मदद करता है । खेल के लिए उम्र की कोई पाबंदी नहीं होती । पर हां बचपन से ही हम खेल के महत्व को पहचाने तो निश्चित ही हमें लम्बी उम्र तक का फ़ायदा होता है। इसलिए अपने जीवन में खेलने का लक्ष्य सुनिश्चित करें । हमारे देश में प्रतिवर्ष 29 अगस्त को खेल दिवस मनाया जाता है । खेलों को बढ़ावा देने के लिए सरकार की तरफ़ से विभिन्न पुरस्कार भी दिए जाते हैं जिनमें राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार, अर्जुन पुरस्कार, द्रोणाचार्य पुरस्कार खिलाड़ियों को प्रदान किए जाते हैं । खेलों की कैरियर निर्माण में भी अहम भूमिका है, विभिन्न सरकारी विभागों में खेल कोटे के अतंर्गत भर्ती होता है और नौकरी के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने के अवसर भी मिलते हैं जिससे अपने विभाग के साथ-साथ अपने नाम को भी शोहरत मिलती है।

पारितोष चौधरी
वरि. लेखापरीक्षक

आलस्य
....मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन

नीरू त्रिपाठी
आशुलिपिक

एक समय की बात है, वन में स्थित एक आश्रम में एक ज्ञानी ऋषिदेव रहा करते थे, ज्ञान प्राप्ति के लिए दूर-दूर से शिष्य उनके पास आया करते थे और उनके सानिध्य में आश्रम में ही रहकर शिक्षा प्राप्त किया करते थे। उन्हीं शिष्यों में से एक शिष्य अपने ऋषिदेव का बहुत आदर-सम्मान किया करता था। ऋषिदेव भी अपने इस शिष्य से बहुत स्नेह किया करते थे और वह उन्हें अत्यन्त प्रिय था। लेकिन वह शिष्य अपने अध्ययन के प्रति आलसी और स्वभाव से दीर्घसूत्री था। सदा परिश्रम से दूर भागने की कोशिश करता तथा आज के काम को कल के लिए छोड़ दिया करता था। अब ऋषिदेव कुछ चिंतित रहने लगे कि कहीं उनका यह शिष्य जीवन-संग्राम से पराजित न हो जाए। आलस्य में व्यक्ति को अकर्मण्य बनाने की पूरी सामर्थ्य होती है। ऐसा व्यक्ति बिना परिश्रम के ही फलोपभोग की कामना करता है, वह यह भूल जाता है कि अगर हमारे सामने तरह –तरह के व्यंजनों से भरा थाल भी रखा हो तो भी उसे खाने के लिए परिश्रम हमें खुद ही करना पड़ता है। शेर को जंगल का राजा होते हुए भी अपने भोजन के लिए स्वयं ही शिकार के पीछे भागना पड़ता है अर्थात् बिना परिश्रम के कुछ भी पाना मुश्किल है। ऋषिदेव ने मन ही मन अपने शिष्य के कल्याण के लिए एक योजना बना ली। एक दिन एक पत्थर का टुकड़ा अपने शिष्य के हाथ में देतु हुए ऋषिदेव ने कहा- पुत्र ! यह कोई सामान्य पत्थर नहीं, बल्कि पारस पत्थर है। जो भी लोहे की वस्तु को तुम इससे स्पर्श करोगे, वह सोने में परिवर्तित हो जाएगी। मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ इसलिए दो दिन के लिए मैं तुम्हें यह पारस पत्थर दे रहा हूँ। इन दो दिनों में आश्रम में नहीं रहूंगा,मैं पड़ोसी गांव में रहने वाले अपने एक मित्र के घर जा रहा हूँ। पर याद रहे कि दूसरे दिन सूर्यास्त के पश्चात् मैं इसे तुमसे वापस ले लूंगा।

शिष्य इस सुअवसर को पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ लेकिन आलसी होने के स्वभाव के कारण उसने अपना पहला पूरा दिन यह कल्पना करते-करते बिता दिया कि कितना स्वर्ण पर्याप्त रहेगा ताकि सारी ज़िन्दगी उसे कोई काम न करना पड़े। जब उसके पास बहुत सारा सोना होगा तब वह कितना, प्रसन्न, सुखी समृद्ध और संतुष्ट रहेगा, इतने नौकर-चाकर होंगे कि उसे पानी का एक गिलास भी खुद से नहीं लेना पड़ेगा। फिर दूसरे दिन जब वह प्रात: काल जागा, उसे अच्छी तरह से स्मरण था कि आज दूसरा और अंतिम दिन है स्वर्ण पाने का। उसने मन में पक्का विचार किया कि आज वह पारस पत्थर का लाभ अवश्य उठाएगा। उसने निश्चय किया कि वो बाज़ार से लोहे के बड़े-बड़े कुछ टुकड़े खरीद कर लाएगा और उन्हें स्वर्ण में परिवर्तित कर लेगा। उसने सोचा कि इस काम में ज़्यादा समय नहीं लगेगा वो कभी भी बाज़ार जाकर लोहा ख़रीद कर ला सकता है और बाज़ार भी आश्रम से करीब ही तो है तभी उसने सोचा कि भूख लगी है पहले दोपहर का भोजन कर लूं फिर जाता हूं। लेकिन भोजन करने के बाद उसे विश्राम करने की आदत थी और उसने उठके थोड़ी मेहनत करने के बजाय, थोड़ी देर आराम करना उचित समझा परंतु आलस्य से परिपूर्ण उसका शरीर नींद की आगोश में आ गया और अपने अमीर बनने के सुखद स्वप्न की गहराईयों में खो गया। अचानक से किसी आवाज़ से उसकी निद्रा टूट गई और वह हड़बड़ा के उठा और देखा कि ऋषिदेव द्वार पर खड़े हैं, सूर्यास्त बहुत पहले ही हो चुका था, उसे समझ आ गया था कि अब समय उसके हाथ से निकल चुका है। ये देखते ही वह उनके चरणों पर गिरकर, उस पारस पत्थर को एक दिन और अपने पास रखने के लिए प्रार्थना करने लगा लेकिन ऋषिदेव नहीं माने और उन्होंने कहा मेरा दिया हुआ समय समाप्त हो चुका है। अत: अब उसे अपने वादे के मुताबिक वह पारस पत्थर वापस करना होगा। शिष्य का अमीर और धनवान बनने का सपना धरा का धरा रह गया। पर इस घटना की वजह से शिष्य को एक बहुत बड़ी सीख मिल गयी, उसे अपने आलस्य पर पछतावा होने लगा, वह समझ गया कि आलस्य उसके जीवन के लिए एक बहुत बड़ा अभिशाप है और उसने प्रण किया कि अब वो कभी भी काम से जी नहीं चुराएगा और आज के काम को कल पर नहीं छोड़ेगा और एक कर्मठ, सजग और सक्रिय व्यक्ति बन कर दिखायेगा।

उसके इस प्रण से गुरूजी अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्हें इस बात की बहुत खुशी हुई कि उनके प्रिय शिष्य को जीवन की सबसे बड़ी सीख मिल गई है। इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि आज के काम को कभी भी कल पर नहीं टालना चाहिए।

खुद से बातें

शंकर मेहरवाल

डीईओ

जब प्रश्न हमारे खुद के हों,
और जवाब सभी अनसुलझे हों,
तब हम जवाब तलाशते हैं
कुछ कही अनकही बातों में।
इंसा हैं हम कठिन बहुत है,
बीती ताहि बिसारन को,
पर उम्र नहीं गुज़रती है,
गुज़रे बीते जज़्बातों में।
कभी शांत कभी झंझावात होता,
जीवन अपना है सागर सा,
कश्ती लेकर चलने वालों को,
डर कैसा सैलाबों से।
प्रश्न हो या फिर दुविधाएँ,
उठती हैं लहरों के मानिंद,
पर निश्चित है इनका गिरना भी,
तो भ्रम कैसा सुलझाने में।

जीवन में उथल-पुथल होती,
विश्वास की एक लौ सक्षम है,
लक्षित, रचने को सुन्दरतम्,
श्याम मेघ भी छाते हैं पर,
परिलक्षित होने को सावन में।
पर दृश्यमान नहीं होता आगम,
उद्वेलित जब तक चंचल मन,
जैसे धुँध भरी प्रतिबिम्ब बनेगी,
संग हिलोरों के जल में।
ध्यान रहे एक बंद हुआ तो,
पट चार खुलेंगे तत्क्षण ही,
मन की हर धुँध मिटाने में।
नियति नहीं निर्देशित रहना,
निर्देशक भी हम ही स्वयं,
निर्देशित-निर्देशक का अंतर,
है विश्वास भरे समर्पण में।

सनम

कुमार सौरभ

वरि.लेखापरीक्षक

जबसे हूँ देखा, मैं तुझको सनम,
खो गया हूँ, नहीं होश मुझको सनम।
तू फूल-कलियों सी, खुशबू भरी है,
ज़रा खुशबूएं दे दे, मुझको सनम ।।
जबसे हूँ देखा, मैं तुझको सनम,
खो गया हूँ, नहीं होश मुझको सनम।
नैना तेरे, झील-सागर बने हैं,
केश ऐसे हैं जैसे, बादल घने हैं।
होंठ से मधु की धारा, टपकती सदा,
इक बूंद दे दे, तू मुझको सनम ।।
जबसे हूँ देखा, मैं तुझको सनम,
खो गया हूँ, नहीं होश मुझको सनम।
तेरा नाम लेकर के, मैं जी रहा हूँ,
तेरे हुस्न का मैं, नशा पी रहा हूँ।
जो दिल संभाले, रखा तूने अब तक,
वो दिल भी दे दे, तू मुझको सनम ।।
जबसे हूँ देखा, मैं तुझको सनम,
खो गया हूँ, नहीं होश मुझको सनम।
रति से भी सुंदर, है काया तेरी,
मैं धूप हूँ, तू है छाया मेरी।
जो यौवन की बारिश, तेरे रूप पर है,
भिगो दे ज़रा-सा, तू मुझको सनम ।।
जबसे हूँ देखा, मैं तुझको सनम,
खो गया हूँ, नहीं होश मुझको सनम ।।

खाने में एम एस जी : अच्छा या बुरा ?

सुजाता साई कुमार

पत्नी साई कुमार जे ए, व.लेखापरीक्षक

आज कल बच्चे और बड़े भी चाइनीज़ खाने के शौकीन होते हैं। बाज़ार से इंस्टैंट नूडल्स, सूप मिक्स, सिजलर्स, प्रोसेस्ड मीट और कुछ डिब्बाबंद भोजन खरीदते समय यदि उनकी सामग्री पर नज़र डाली जाए तो एम एस जी (MSG) लिखा हुआ दिखेगा। क्या है यह एम एस जी, खाने से इसका क्या संबंध है, कैसे ये हमारे भोजन और सेहत को प्रभावित करता है?

अमीनो एसिड में पाया जाने प्राकृतिक तत्व है ग्लूटामेट। ग्लूटामिक एसिड युक्त प्रोटीन को पकाकर और उबालकर तोड़ा जाता है, तब जाकर यह ग्लूटामेट बनता है। इसे फैक्टरी में तैयार किया जाता है। एम एस जी यानि मोनोसोडियम जिसका इस्तेमाल भोजन को अधिक स्वादिष्ट बनाने के लिए ख़ास तौर पर चाइनीज़ और जापानी व्यंजनों में होता है। घरों में इस्तेमाल होने वाला 'अजीनोमोटो' ऐसा ब्रांड है जो विश्व का 33 प्रतिशत एम एस जी बनाता है। 'अजीनोमोटो' का मतलब है 'एसेंस ऑफ टेस्ट' (स्वाद का सार)। कंपनी ने इसके नाम के अनुसार ही इसे इस्तेमाल किया। ये सफेद क्रिस्टल पाउडर की तरह दिखने वाला पदार्थ चीनी और नमक की तरह ही दिखता है। इसे खाने में मसालों के जैसे ही इस्तेमाल किया जाता है।

खाने में इसके प्रयोग पर हुए कई शोधों से पता चला है कि इसके ज़्यादा उपयोग से माईग्रेन, घबराहट, हार्मोनल परिवर्तन, कमजोरी, चक्कर आना, सीने में दर्द की शिकायत और बहुत कुछ होता है। इसके सेवन से हम सोडियम ग्लूटामेट के आदी हो जाते हैं। इसका मस्तिष्क में बिल्कुल वैसा ही प्रभाव पड़ता है जैसे ड्रग्स के बाद मस्तिष्क आदी हो जाता है। जिन लोगों को ब्लड प्रेशर (रक्तचाप) की शिकायत है, उनके लिए एम एस जी किसी ज़हर से कम नहीं है। कई शोधों में यह साबित हो चुका है कि एम एस जी युक्त भोजन बच्चों में मोटापे का एक कारण है। एम एस जी के सेवन से शरीर में इंसुलिन की मात्रा प्रभावित होती है इसलिए ये टाइप 2 डायबिटीज़ के खतरे को बढ़ाता है। इससे होने वाली बीमारियों की वजह से एम एस जी वाले खाद्य पदार्थों को जांच लिस्ट में रखा जाता है।

बाज़ार में अक्सर सूप मिक्स या नूडल्स खरीदते समय उन पर लिखा 'नो एडड एम एस जी' पढ़कर लोग इसे सुरक्षित मान लेते हैं, पर इसके पीछे कंपनियों की छिपी चालाकी को जानना चाहिए। बहुत सारे उत्पादों में 'नो एडड एम एस जी' लिखा होने के बावजूद इसमें एम एस जी हो सकता है क्योंकि इस टिप्पणी का

मतलब ये है कि इस उत्पाद को बनाने के बाद इसमें एम एस जी नहीं मिलाया गया जबकि इसे बनाते समय इसमें एम एस जी का इस्तेमाल किया गया हो सकता है।

ग्लूटामेट एक अमीनो एसिड है जो लगभग सब में पाया जाता है जो हम खाते हैं। यह कुदरती तौर पर प्रोटीन युक्त भोजन जैसे मीट, मछली, दूध से बने उत्पाद, सोय सॉस, पके टमाटर, अखरोट, सूखे मशरूम और समुद्री शैवाल में पाया जाता है। यह हमारे शरीर में भी कुदरती तौर पर मौजूद रहता है।

हमारे मस्तिष्क में यह अमीनो एसिड अन्य किसी अमीनो एसिड की तुलना में अधिक पाया जाता है। इसकी सीखने, स्मरणशक्ति अन्य कई मस्तिष्क से जुड़े कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका है। जबकि एम एस जी एक कृत्रिम रूप से बनाया गया रासायनिक तत्व है। ऐसा माना जाता है कि एम एस जी खट्टे, मीठे, कड़वे, और नमकीन चार प्रकार के मूल स्वादों के अलावा एक पांचवाँ स्वाद बढ़ाता है जिसे जापानी भाषा में 'उमामी' कहा जाता है। हमारा शरीर कुदरती ग्लूटामेट और एम एस जी में अंतर नहीं कर सकता।

बहुत समय से एम एस जी और इसका प्रयोग करने वाले उत्पाद चर्चा का विषय रहे हैं और अब भी इस के प्रयोग और सेहत पर पड़ने वाले असर को लेकर शोध जारी है। कंपनियां यह दलील देती हैं कि कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है कि इसके प्रयोग से सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ता है यदि इसे सुरक्षित मात्रा में लिया जाए तो। वहीं बहुत से लोग यह मानते हैं कि उनको होने वाली एलर्जी एम एस जी की देन है। इससे जुड़े विवाद अब भी थमने का नाम नहीं ले रहे।

आहार विशेषज्ञों की राय है कि जितना हो सके कृत्रिम पदार्थों के प्रयोग से बचा जाना चाहिए और प्राकृतिक खाद्य पदार्थों का उपयोग किया जाना चाहिए। खाना जितना शुद्ध और मौसम तथा शरीर की प्रकृति के अनुरूप हो उतना ही हमारी सेहत के लिए अच्छा है। हज़ारों साल पहले हमारे ऋषि-मुनि आयुर्वेद के रूप में हमें इस ज्ञान से अवगत करवा चुके हैं। अगली बार जब आप किसी रेस्त्ररां में चाइनीज़ खाने का शौक पूरा करने जाएं तो एक बार एम एस जी के बारे में अवश्य विचार करें।

मेरा शौक- पुस्तकें पढ़ना

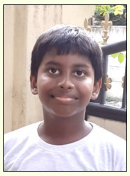

जोशुआ जोन

सुपुत्र श्रीमती उषा बर्टी

व.ले.प.अ.

"किताबें मित्रों में सबसे शांत और स्थिर हैं; वे सलाहकारों में सबसे सुलभ और बुद्धिमान हैं, और शिक्षकों में सबसे धैर्यवान हैं।"
चार्ल्स विलियम इलियट

हर व्यक्ति का अपना-अपना शौक है । मेरा शौक है पुस्तकें पढ़ना । पढ़ने का महत्व ये है कि हमें ज़िंदगी के बारे में जानकारी मिलती है । हमारा ज्ञान बढ़ता है और हमारे शब्द भंडार में वृद्धि होती है । भाषा की प्रवीणता बढ़ती है और साथ-साथ मनोरंजन भी होता है । जब भी मुझे वक्त मिलता है, मैं पुस्तकें पढ़ता हूँ क्योंकि मुझे पुस्तकों से बहुत प्यार है । मैं हर रविवार को राज्य केंद्रीय पुस्तकालय से पुस्तकें लेता हूँ ।

जब मैं बहुत छोटा था मेरे घरवाले मुझे कहानी सुनाते थे । उन्होंने धीरे-धीरे मुझे स्वयं पढ़ने के लिए प्रेरित किया। मुझे साहसिक कार्यों वाली और हास्य प्रधान किताबें बहुत अच्छी लगती हैं । मेरी कुछ मनपसंद किताबें हैं: फेमस फाइव, सिक्रेट सेवन, हैरी पॉटर सीरिज़, जिरोनिमो स्टिल्टन, टिनटिन, एसटेरिक्स, फलयूडा स्टोरीज, मालगुड़ी डेज़ आदि ।

मेरे पसंदीदा लेखक हैं जे.के रोलिंग, एनिड मेरी ब्लाटन, सुधामूर्ति, आर के नारायणन, रिक रसेल रिओर्डन, सत्यजीत रे आदि । फेमस फाइव और सिक्रेट सेवन की तहक़ीक़ात बहुत ही मज़ेदार और बहादुरी से भरपूर होती है । इसे पढ़कर ऐसा लगता है जैसे हम भी इस कहानी का हिस्सा हों और ऐसे कारनामे करने की प्रेरणा मिलती है । इस श्रृंखला के 21 उपन्यास उपलब्ध हैं । बच्चों में यह बहुत ही लोकप्रिय है ।जिरोनिमो स्टिल्टन पत्रकार और संपादक हैं तथा टिनटिन पत्रकार हैं । सत्यजीत रे का फलयूडा एक बंगाली गैर सरकारी जासूस है । ये किरदार अपने दोस्तों के साथ रहस्यों का पता लगाते हैं और अपराधियों का पता लगाकर उन्हें पकड़ते हैं । उनकी खोजें रहस्य और रोमांच से भरपूर होती हैं जो पाठकों को बांधे रखती हैं। इनकी सफलता का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि अपनी मूल भाषा के अलावा ये दुनिया की कई भाषाओं में प्रकाशित की गईं और इन उपन्यासों की एक लंबी श्रृंखला है जो लगातार बढ़ती जा रही है । इन किरदारों पर बहुत सारी कार्टून फिल्में और एनीमेटेड सीरीज़ भी बन चुकी हैं ।

शायद ही कोई ऐसा होगा जो हैरी पॉटर सीरीज़ से परिचित ना हो । बच्चों से लेकर बड़े तक इसके हर उपन्यास का बेसब्री से इंतज़ार करते थे । विमोचन होते ही इसकी सभी प्रतियां मात्र कुछ ही घंटों में बिक जाती थीं । इसके सभी उपन्यासों पर हॉलीवुड में फिल्में बन चुकी हैं ।

आर के नारायणन के मालगुड़ी डेज़ पर दूरदर्शन पर टेलीविज़न कार्यक्रम भी बन चुका है । उनकी कहानियां मालगुड़ी नाम के काल्पनिक कस्बे में होने वाली घटनाओं और किरदारों के इर्द-गिर्द घूमती हैं । स्वामी का किरदार तो बच्चों में बहुत प्रसिद्ध हुआ था । ऐसे अन्य बहुत से उदाहरण हैं जो किताबों की लोकप्रियता को दर्शाते हैं । जब टी वी रेडियो और अन्य साधन नहीं थे तब केवल किताबें ही ज्ञान और मनोरंजन का एकमात्र साधन थीं । अच्छी किताबें पढ़ना अमृत पीने के समान है । जीवन का आनंद लेने के लिए पढ़ना बहुत जरूरी है । अच्छीं पुस्तकें पढ़ने से हमारी सोच बदल जाती है, ज्ञान में वृद्धि होती है और मन को शांति मिलती है । किसी ने ठीक कहा है -

"पुस्तक देती हमको ज्ञान,

जब होता मन परेशान"

अपना आशियाना

अभिनंद अनीष

सुपुत्र श्रीमती जास्मिन ए.

लेखापरीक्षक

सारा जग तो लगे पराया

अपना घर अपना होता है

अपने घर जैसा सुकून शांति या आराम

कहीं और मिल ही नहीं सकता।

सुख और सुरक्षित होने की भावना का आभास

अपने घर की चार दीवारी में मिलता है।

अपने घर के अलावा पूरी दुनिया में

कहीं और नहीं मिलती ये जन्नत।

मुझे बहुत अच्छा लगता है

अपने घर की हर एक चीज़ से बातें करना

कभी-कभी खिड़की में घंटों खड़े रहकर

बाहर के नज़ारों को देखते हुए अपने से बातें करना

अपने कमरे में तकिये को हाथों में लिए

घंटों मन ही मन सोचते रहना,

या फिर अपने आँगन में टहलते - टहलते प्रकृति के साथ खुश होना

मुझे एक ऐसा सुकून देता है जिसका कोई पर्याय नहीं।

मुझे बहुत प्यार है अपने आशियाने से............

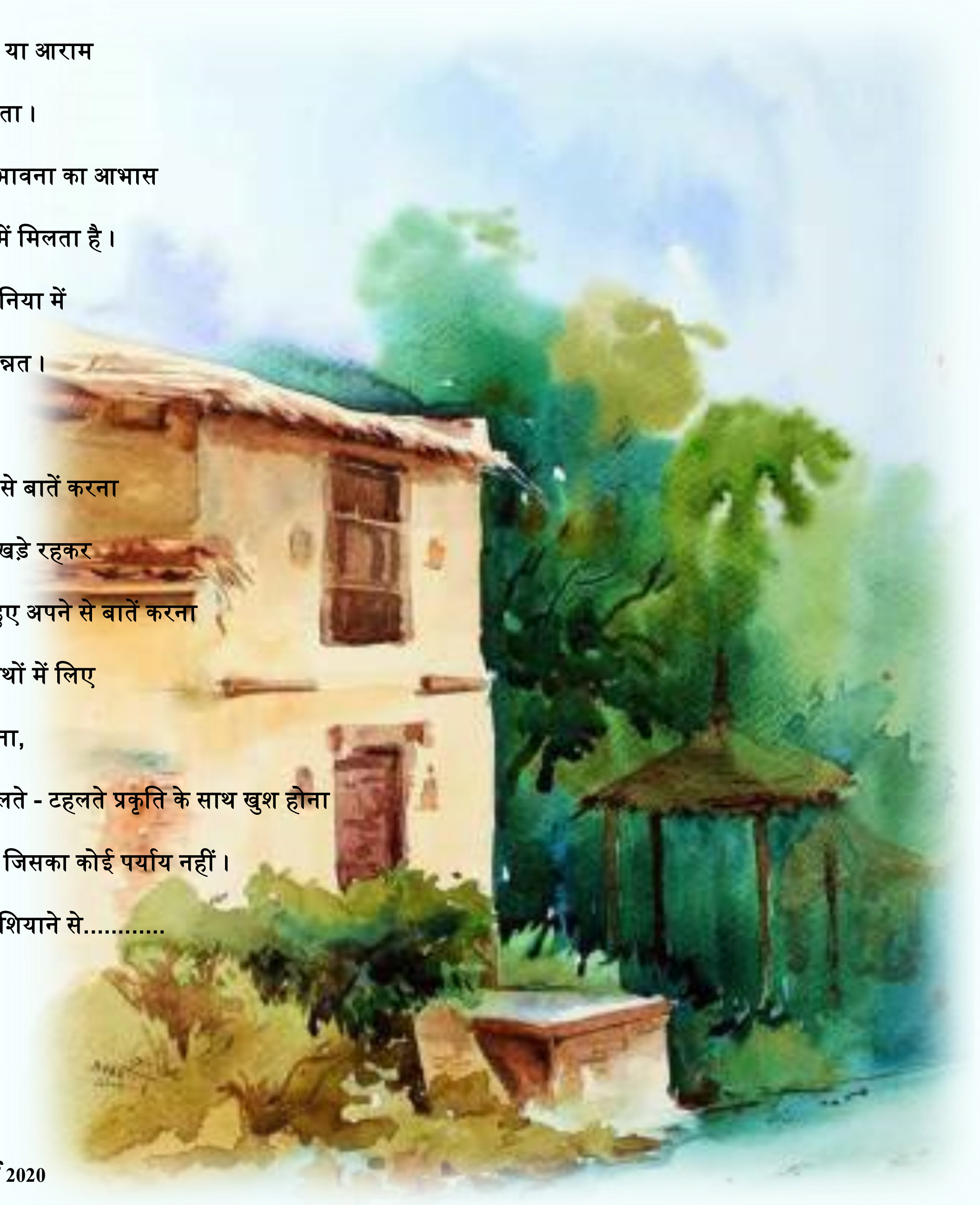

विहंगों का जीवन सन्देश

उषा बर्टी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

मुद्दत से पक्षियों पर सम्मोहित मनुष्य ने जब जानवरों को पालतू बनाना सीखा, पक्षी हमेशा उसके स्थायी साथी रहे हैं। मनुष्यों की आवाज़ की अच्छी तरह से नकल कर रहे तोते और मैना को पलुआ पक्षी के रूप में प्यार किया जाता है। पक्षियों को कई भावनाओं और मूल्यों का प्रतीक भी मानते हैं जैसे कबूतरों को शान्ति का प्रतीक माना जाता है। मोर सुंदरता का प्रतीक है तो हंस राजसी शान का, कौवा कुटिलता का और फाल्कन उपलब्धि का।

विहंगों के बारे में अनेक रिवायत के साथ-साथ धार्मिक ग्रंथों में भी उल्लेख है। बाइबिल में पैगंबर को भोजन खिलाने वाली बावड़ियों का... नूह की नौका से बाढ़ की स्थिति देखने के लिए भेजे जाने वाले पक्षी का उल्लेख है। ऐसा कहा जाता है कि एक निषाद द्वारा क्रौंच मिथुनों में से एक की हत्या देखने पर आदि कवि वाल्मीकि के मन में पनपी गहरी व्यथा से ही संस्कृत भाषा का पहला श्लोक फूट निकला—"मां निषाद! प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः। चत्क्रौंचमिथुनादेकम् अवधी काममोहितम्।।" इसी से ही महाकाव्य रामायण का जन्म हुआ।

रामायण में शक्तिशाली जटायू का प्रसंग भी आता है जिसने रावण द्वारा सीता का अपहरण किए जाने पर उसका विरोध करते हुए अपने प्राणों का बलिदान दे दिया था।

पौराणिक काल से लेकर आज तक पक्षी मानव जीवन का प्रेरणा स्रोत रहा है। विहंगों से ही वायुगतिकीय (एरोडाइनैमिक्स), विमानन (एवीएशन), भौतिक विज्ञान (फिज़िक्स) आदि क्षेत्रों के आविष्कारों को प्रेरणा मिली है। डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम ने लिखा है- उनके शिक्षक श्री शिव सुब्रामणिया ने छात्रों को रामेश्वरम के समुद्री तट पर ले जाकर 10 से 20 समुद्री पक्षियों के झुंड की उड़ान दिखाई और उनकी उड़ान की गतिशीलता के बारे में समझाया। पक्षियों और उनकी उड़ान का अवलोकन करने के बाद उन्होंने फैसला किया कि उनके भविष्य का अध्ययन उड़ान प्रणालियों के संदर्भ में होना चाहिए। राइट भाइयों ने भी पक्षियों और उनकी उड़ान के बारे में अध्ययन करने के बाद ही विमान को डिज़ाइन किया।

हालाँकि पक्षियों को देखकर हम जैसे जन साधारण बड़े आविष्कार करने में सक्षम नहीं हैं, पर हम पक्षियों से बहुत सारे जीवन मूल्य ज़रूर अपना सकते हैं। मानव जीवन हमेशा संघर्षों से भरा है। दैनिक जीवन की तनाव व थकान से मन का वेग खोकर इधर-उधर भटकते रहते मानव को प्रकृति और उसके जीव को शिक्षक के रूप में अपनाना चाहिए।

साहस पूर्वक जीवन की चुनौतियों का सामना करना तो हमें बाज़ (ईगल) से सीखना चाहिए। बाज़ के बारे में दिलचस्प बात यह है कि- तूफान में भी उड़ने के लिए हमेशा तैयार रहता है।

जब अन्य पक्षी तूफान से भागने और छिपने की कोशिश करते हैं तो बाज़ कुछ ही क्षणों में तूफान की हवा से शक्ति अपना कर ऊंचा उठ जाता है । वो तूफान के दबाव का उपयोग अपनी स्वंय की ऊर्जा नष्ट किए बिना हवा में तैरने के लिए करता है । इतना ही नहीं... जब बारिश होती है तो उससे बचने के लिए बादल के ऊपर उड़ान भरता है । इसी तरह हमें भी जीवन में आने वाली चुनौतियों से ताकत लेनी चाहिए । बाज़ से हमें यह सीखना चाहिए कि जीवन में समस्याएं हमें मज़बूत और बेहतर बनाने के लिए आतीं हैं ।

प्राचीन काल से ही **कबूतरों** को दूत अथवा सन्देशवाहक के रूप में जाना जाता है, इसका कारण है उसके घर वापस आने का गुण । ज़िंदगी हमें घर से बहुत दूर ले जा सकती है । ज़िंदगी की सफलता से प्राप्त प्रतिष्ठा का प्रभाव हमें कितनी ही ऊंचाइयों पर ले जाए, हमेशा जीवन की विनम्र शुरुआत को याद रखना चाहिए और अपनी जड़ों की ओर नतमस्तक रहना चाहिए ।

पारस्परिक सहायता का भाव ही **प्रवासी पक्षियों** की विशेषता है । जब लालन-पालन करते स्थलों पर स्थितियां प्रतिकूल हो जाती हैं, प्रवासी पक्षी अपने बच्चों को जन्म देने....... खिलाने.......पिलाने और पालने के लिए सर्वोत्तम पारिस्थितिकीय स्थितियों और आवासों की खोज में हज़ारों किलोमीटर का सफर तय करते हैं । अधिकतर पक्षी झुंडों में चलते हैं । उन्हें अपने रास्ते पर बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, लेकिन वे आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते रहते

हैं । एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर पलायन करते समय कई झुंडों में हज़ारों की संख्या में पक्षी होते हैं । जब अगुवाई करने वाले पक्षी थक जाते हैं तो वे पीछे हट जाते हैं और उनकी जगह दूसरे पक्षी ले लेते हैं । हमें आत्मविश्वास खोए बिना कठिन परिस्थितियों में जीवित रहने की आशा नहीं खोनी चाहिए । घर का माहौल ऐसा होना चाहिए कि जीवन की कठिनाईयों का सामना परिवार के सदस्य एक साथ कर सकें । ज़रूरत पड़ने पर

दूसरों की मदद करना और समाज में जब लय भंग हो जाती है, सभी को एक डोर में बांध कर सामंजस्य स्थापित करना प्रत्येक व्यक्ति का सामाजिक दायित्व भी है ।

प्रतिभा को बल से पकड़ कर अपने अस्तित्व को रंग देना बहुरंगी पखों वाले **मोर** की विशेषता है। इसकी और एक विशेषता है- शर्मीलापन । यह मनमोहक पक्षी मानवीय उपस्थिति को महसूस करने पर भाग जाता है । लेकिन जब मोर नाचना शुरू करता है वह इसमें पूरी तरह से तल्लीन होकर नाचता है और देखने वाले मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। भले ही वे मनुष्यों से घिरे हों, वे अपने परिवेश को भूलकर नृत्य का आनंद लेते हैं । हमारे समाज में भी ऐसे बहुत सारे लोग हैं जो दर्शकों का सामना करने के डर से अपनी प्रतिभाओं को कैदी बना कर जीवन बिताते हैं, अवसर मिलने पर भी उसका सही उपयोग नहीं कर पाते और ज़िंदगी भर पछताते रहते हैं । इसलिए उचित है कि हम इन

इंद्रधनुषी रंग वालों से सहीं समय पर सहीं फैसला करने के लिए आवश्यक मनोबल को अपना लें । जब हमें अपनी प्रतिभाओं को प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है, हमें ज़रूर करना चाहिए। अपने लक्ष्य की ओर ध्यान केंद्रित करते हुए वहां तक पहुँचने का अथक प्रयास करना **फ़ाल्कन** की अपनी विशेषता है । जब यह पक्षी अपने शिकार को देखता है, बाधाओं को अनदेखा करते हुए अपना ध्यान उस पर केंद्रित करता है और उसे पाने के लिए बड़ी तेज़ी से उतरता है । वह अपना ध्यान शिकार से तब तक नहीं हटाता जब तक वह उसे पकड़ नहीं लेता । इससे हमें ये सीख मिलती है कि अपनी दृष्टि को एकाग्र रखें तथा ध्यान अपने लक्ष्य पर केंद्रित करें और आने वाले अवसरों का सही उपयोग करने के लिए तत्पर रहें ....आपका जीवन सफल होगा ।

विहंगों के जीवन के विहंगावलोकन से जो सबक सीखा जा सकता है, वह अंतहीन है । घोंसले का निर्माण करते समय वे जिस संयम और दृढ़ता का प्रदर्शन करते हैं वह उल्लेखनीय हैं । सामग्री को थोड़ा-थोड़ा इकट्ठा कर वे बहुत प्यार और एहतियात के साथ अपने घोंसले का निर्माण करते हैं । पक्षी अपने से छोटों की देखभाल करते हैं । माता पक्षी अपने बच्चों के लिए खाना लाती हैं और पिता घोंसले की

चौकसी करते हैं तथा शिकारियों से बच्चों की रक्षा करते हैं । जब तक बच्चे उड़ना नहीं सीख जाते तब तक माता-पिता द्वारा उनकी देखभाल की जाती है । हमें पक्षियों से पारिवारिक मूल्यों को सीखने की ज़रूरत है । पक्षी हमेशा हंसमुख, प्रसन्न और सक्रिय रहते हैं । इस जीव मण्डल में रहने वाले मनुष्यों की ही नहीं बल्कि पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों, मछलियों और कीड़े -मकोड़ों की भी प्रभात पक्षियों के गाने से शुरु होती है । पक्षियों के, प्रातः जल्दी उठने, कर्मशील बनने, धैर्य और आत्मविश्वास के साथ चुनौतियों का सामना करने और हमेशा प्रसन्न चित्त होकर सक्रिय रहने का जो व्यवहार वैचित्र्य है वह श्लाघनीय है । पक्षी जगत पर्यावरण का सूचक है, अगर वे मुसीबत में हैं तो समझ लेना चाहिए कि हमारे भी बुरे दिन दूर नहीं ।

पक्षी बहुत छोटे लगते हैं...... लेकिन उनका दृष्टिकोण विस्तृत है। पक्षी बहुत कमज़ोर लगते हैं......... लेकिन वे आसमान में ऊंची उड़ान भरते हैं ।

मानव का गुण - विनम्रता

आशीष कुमार

वरि. लेखापरीक्षक

एक बार नदी ने समुद्र से बड़े ही गर्वीले शब्दों में कहा, बताओ, पानी की तेज़ धाराओं के साथ मैं तुम्हारे लिए क्या बहा कर लाऊँ? तुम चाहो तो मैं पहाड़, मकान, पेड़, पशु, मानव आदि सभी को उखाड़ कर ला सकती हूँ।

समुद्र समझ गया कि नदी को अहंकार आ गया है। उसने कहा, यदि मेरे लिए कुछ लाना ही चाहती हो तो थोड़ी-सी घास उखाड़कर ले आना। समुद्र की बात सुनकर नदी ने कहा, बस, इतनी सी बात! अभी आपकी सेवा में हाज़िर कर देती हूँ। नदी ने अपने पानी का प्रचंड प्रवाह घास को उखाड़ने के लिए लगाया परंतु घास नहीं उखड़ी। नदी ने हार नहीं मानी और बार बार प्रयास किया पर घास बार-बार पानी के वेग के सामने झुक जाती और उखड़ने से बच जाती। नदी को सफलता नहीं मिली।

थकी, हारी, निराश नदी समुद्र के पास पहुँची और अपना सिर झुकाकर रोने लगी, मैं मकान, वृक्ष, पहाड़, पशु मनुष्य आदि बहाकर ला सकती हूँ परंतु घास उखाड़ कर नहीं ला सकी क्योंकि जब भी मैंने प्रचंड वेग से घास पर प्रहार किया उसने झुक कर अपने आप को बचा लिया और मैं ऊपर से खाली हाथ निकल गई।

नदी की बात सुनकर समुद्र ने मुस्कुराते हुए कहा, जो कठोर होते हैं वे आसानी से उखड़ जाते हैं लेकिन जिसने घास जैसी विनम्रता सीख ली हो उसे प्रचंड वेग भी नहीं उखाड़ सकता। समुद्र की बात सुनकर नदी का घमंड भी चूर-चूर हो गया।

विनम्र अर्थात् जिसमें लचीलापन है, जो आसानी से मुड़ जाता है, वह टूटता नहीं। नम्रता में जीतने की कला है, शौर्य की पराकाष्ठा है। नम्रता में सर्व का सम्मान संचित है। नम्रता हर सफल व्यक्ति का गहना है। नम्रता ही बड़प्पन है। दुनिया में बड़ा होना है तो छोटा होना आना चाहिए। छोटा होने का अर्थ है विनम्रता। संसार को विनम्रता से जीत सकते हैं। ऊँची से ऊँची मंज़िल हासिल कर लेने के बाद भी अहंकार से दूर रहकर विनम्र बने रहना चाहिए।

स्थान कोई भी हो, विनम्र व्यक्ति हर जगह सम्मान हासिल करता है। जहां विरोध हो वहां प्रतिरोध और बल से काम नहीं चल सकता। विनम्रता से ही समस्याओं का हल संभव है। विनम्रता के बिना सच्चा स्नेह नहीं पाया जा सकता। जो व्यक्ति अहंकार और वाणी की कठोरता से बचकर रहता है वही दीर्घजीवी बन जाता है। सबकी विशेषताएँ देखो और विशेषताएँ ही वर्णन करो तो हममें भी विशेषताएं आ जायेंगी।

जाति प्रथा... -एक अभिशाप

आलोक देव एस
सुपुत्र श्रीमती श्रीजा एस
वरि. लेखापरीक्षक

भारतीय समाज में सदियों से कई सामाजिक बुराईयां प्रचलित हैं और जाति प्रथा उनमें से एक है। जब से मनुष्य ने खेती करना शुरु किया, तब से उससे जुड़े तरह-तरह के पेशे और व्यवसाय भी उभरने लगे। बहुत प्राचीन काल से भारत में जाति-प्रथा कायम थी। भारत की हज़ारों जातियों को चार वर्णों या गणों में बांटा गया था। वर्ण प्रथा की शुरूआत समाज में कार्यों को विभाजित कर सहीं कार्यान्वियन करने के लिए किया गया था। जो आगे जाकर ऊँच-नीच की कुप्रथा का रूप धारण कर लिया।

पुराने शास्त्रकारों ने हर जाति के कर्तव्य भी निर्धारित किए थे। सब से उच्च श्रेणी में ब्राह्मण आते हैं, जो पुरोहित और पन्डित हैं। दूसरी श्रेणी में क्षत्रिय आते हैं, जिनका धर्म है युद्ध और शासन करना। तीसरी श्रेणी में वैश्य आते हैं, जिनका काम है व्यापार और खेती। चौथी श्रेणी में शूद्र आते हैं जिनमें दस्तकार, श्रमजीवी आदि आते हैं।

परंपरा से जो व्यक्ति जिस पेशे से जुड़े रहे, आगे चल कर उनकी एक अलग जाति हो गई। यह प्रथा फिर कई प्रकार के दमन, अंधविश्वासों और अनाचारों का मूल कारण बनी।

आम सड़कों से चलने, मन्दिर और सार्वजनिक स्थानों में प्रवेश करने की उन्हें अनुमति नहीं थी। शिक्षा पाने, बढ़िया कपड़े और आभूषण पहनने की उन्हें मनाही थी। इनके छोटे से अपराधों के लिए भी कड़ी सज़ा दी जाती थी। यहां तक कि मरने के बाद उनका अंतिम संस्कार भी नहीं किया जाता था। इस संदर्भ में कुछ समाज सुधारक इन अत्याचारों के खिलाफ सामने आए। श्री नारायण गुरु, चट्टंपी स्वामिकल, अय्यंकाली, मन्नत पद्मनाभन, पोईकयिल योहन्नान आदि अनेक समाज-सुधारकों के परिश्रम के फलस्वरूप जाति संबंधी ऊंच-नीच के भाव को बहुत हद तक मिटाने में सफलता मिली है।

आज सब लोग जानते हैं कि जाति-प्रथा समाज की उन्नति में बाधा डालने वाला अभिशाप है, एक बुराई है जो सामाजिक, राष्ट्रीय को दुष्प्रभावित करती है और इस तरह राष्ट्रीय और आर्थिक प्रगति को मंद करती है। आज की पीढ़ी का कर्तव्य है कि इस प्रथा को जड़ से उखाड़े और असमानता, एकाधिकार विद्वेष आदि दोषों से समाज को मुक्त करे। हमारे संविधान ने सबको समान अधिकार दिए हैं। इसके अनुसार हमें आगे बढ़ना चाहिए।

किसी व्यक्ति की पहचान उसकी जाति, कुल, वर्ग से नहीं अपितु उसकी योग्यता और सामर्थ्य से होनी चाहिए। वर्तमान समय में जाति आधारित समाज को किसी भी दृष्टि से सभ्यतापूर्ण नहीं कहा जा सकता। प्रत्येक व्यक्ति में कोई न कोई प्रतिभा छुपी होती है जो जन्मसिद्ध होती है। समाज को उसे ऐसे मौके प्रदान करने चाहिए कि वे चमक उठें। उसके साथ-साथ समाज स्वयं प्रकाशपूर्ण हो जाएगा। समाज को उसे प्रोत्साहन देकर आगे बढ़ाना चाहिए। तभी एक विकसित और सभ्य समाज का निर्माण संभव है।

जयराज मण्णूरान सुपुत्र श्री राजम सी., लेखापरीक्षक, द्वारा बनाई गई कलाकृतियां